भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 6 **अगस्त** 2005 **अंक** 8

जब मैं नहीं रहूँगी

जिन किताबों को मैं
आज सहेज कर रखती हूँ
वे कल मेरे मरने के बाद
लावारिस हो जाएँगी
और धूल जमे अस्तित्वों पर
अपना राज जमाएँगे दीमक
न चाहते हुए भी
सान्निध्य मिलेगा
सीलन भरे आँखों का
उसी दम घोंटू दुर्गन्ध में
निष्प्राण पड़ जाएँगे शब्द पन्नों में
और पन्ने भी जिल्दों
के बीच कब तक बचा पाएँगे
किताबों का
नाम और सम्मान
कौन सहेजेगा इन किताबों को
मेरे बाद।

किताबें

किताबों ने अक्सर
बचाया है मुझे
कमरों की घुटन से,
दुःखों की शीत से
उस अदद निष्ठुर प्रेमी
की यादों के नश्तर से
किताबें मेरी परियों सी
सखियाँ मुझे ले जाती हैं
कल्पना लोक के असीम
रहस्य जगत में
किताबें ही सुलाती हैं
मुझे रात की तन्हाई में गहरी नींद
किताबें ही काली स्याही से
काले अक्षरों में सुरक्षित रखेंगी
युगों तक मेरा नाम
और अस्तित्व अजर-अमर
कर देंगी एक दिन किताबें ही

—सुश्री प्रेरणा सारवान

अब गाँधी नहीं, मैकाले का भारत

आज देश वैश्वीकरण की ओर बढ़ रहा है। देश में अंग्रेजी माध्यम शिक्षण संस्थाओं की निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। मैकाले का स्वप्न साकार होता जा रहा है। शासकीय विद्यालयों के प्रति लोगों का आकर्षण समाप्त हो रहा है। पब्लिक कान्वेन्ट स्कूलों में भारी फीस देकर बच्चों को पढ़ाया जा रहा है। हिन्दी पढ़ने वालों की संख्या निरन्तर घटती जा रही है। स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं में हिन्दी की सीटें खाली जा रही हैं।

मेरठ के एक पब्लिक स्कूल की पत्रिका में कहा गया है—''पिछले 50-55 साल में भारत का कोई ठोस भविष्य नहीं बन सका है, क्योंकि देश में कान्वेन्ट एवं अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की कमी थी। अब सरकारी शिक्षा द्रव्य में बदलती जा रही है। पहले 'लोकल कुत्तों' को लेकर चिन्ता थी, अब 'लोकल बच्चों' को लेकर भविष्य की चिन्ता है। लोकल कुत्ते से जैसे-तैसे गुजारा कर लेंगे लेकिन लोकल बच्चों का क्या होगा।'' आगे कहा गया है—''कान्वेन्ट व अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों पर उनके माता-पिता गर्व करते हैं जबकि हिन्दी माध्यम सहायता प्राप्त व सरकारी स्कूलों के बच्चों को अपने माता-पिता पर गर्व होता है।'' यह भी कहा गया है—''कान्वेन्ट का बच्चा कोलगेट करता है और झाग थूकता है और गवर्नमेंट एवं हिन्दी माध्यम का सहायता प्राप्त विद्यालय का बच्चा दातून चबाता है, नमक-तेल हथेली पर मिलाकर दाँतों से उँगलियों को रगड़ता है'' आदि आदि।

1800 ई० में लार्ड वेलेजली ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी, जो व्यापारिक प्रतिष्ठान से शासन की ओर अग्रसर हो रही थी, अपने कर्मचारियों के लिए फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना की। इस कालेज में सरकारी कर्मचारियों को भारतीयों से मेल-जोल बढ़ाने के लिए तत्कालीन भाषा सीखने के लिए प्रेरित किया गया। इसके लिए पाठ्य-पुस्तकें तथा लोकप्रचलित पुस्तकें भी प्रकाशित की गईं।

10 जून 1834 को बंगाल के तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बेंटिक की कौंसिल का विधिक सदस्य लार्ड मैकाले भारत आया। मैकाले अंग्रेजी का प्रकाण्ड विद्वान् था। उसने 2 फरवरी 1835 को शिक्षा के सम्बन्ध में अपना विवरण-पत्र प्रस्तुत किया। उसके लिए साहित्य का अर्थ था अंग्रेजी साहित्य। उसकी घोषणा थी—''अंग्रेजीराज की नींव को पुख्ता करने और अंग्रेजों के भारत छोड़कर इंग्लैण्ड वापस जाने के बाद हमें भारत में एक ऐसी पीढ़ी तैयार करनी है जो वेष और रंग से हिन्दुस्तानी हों, लेकिन मन-मिज़ाज से अंग्रेज हो।''

आज मन-मिजाज ही नहीं, वेष-रंग सब कुछ अंग्रेजी में ढल गया है। यह गाँधी का भारत नहीं मैकाले का भारत है।

आज हिन्दी के विकास के लिए सरकार करोड़ों रुपये व्यय कर रही है, किन्तु प्रशासन स्तर पर अंग्रेजी की ही प्रतिष्ठा है।

वैश्वीकरण ने मैकाले के स्वप्न को पूर्णतया साकार कर दिया है। स्वतंत्र भारत से अंग्रेज गये किन्तु अंग्रेजी पूरी तरह हमारे देश के प्रत्येक स्तर को प्रभावित करती जा रही है। राष्ट्रीय अस्मिता लुप्त हो रही है, राजनीतिक भौतिकता की ओर अग्रसर इस देश के सरकारी इतिहासकार कहते हैं, 'राम' और 'कृष्ण' मिथक हैं, इनका कोई पुरातात्विक आधार नहीं है।

गाँधीजी के 'हे राम' को कहाँ ढूँढें ? ऐसे देश का भविष्य क्या होगा ?

— पुरुषोत्तमदास मोदी

बोलती हैं तो चुप नहीं होतीं
किताबें

डॉ० बच्चन सिंह

प्राय: प्रत्येक घर में कुछ वस्तुएँ उपेक्षित पड़ी रहती हैं। किसी के घर में दीवार पर टँगी हुई बिना बैटरी की घड़ी, महीनों टपकते हुए नल, किसी के घर में ऊषा प्रियम्वदा की कहानी के नायक गजाधर बाबू यानी बूढ़ा-बुढ़िया किन्तु मेरे घर में सबसे अधिक उपेक्षित पुस्तकें हैं। उनकी ओर भूलकर भी कोई नहीं जाता। जरूरत पड़ने पर कभी-कभार कुछ आवश्यक पुस्तकें नीचे ले आता हूँ। वे फिर ऊपर नहीं जातीं। अब सीढ़ियाँ चढ़ने में डर लगता है।

ऊपर के कमरे में मैंने एक लाइब्रेरी बना रखी थी। अब उसमें किताबों के साथ भृत्य रहता है। मुझे मनुस्मृति का एक सन्दर्भ खोजना था। कोई ऊपर से ला भी नहीं सकता था। मनुवाद का नाम तो लोग जानते ही हैं लेकिन उसमें के साँप-गोजर को लोग नहीं जानते। किताब के दर्शन तो कम ही लोगों ने किये होंगे। स्त्री-विमर्श और दलित साहित्य में मगज खपाने वालों के बारे में कुछ कहना गुनाह है। आश्चर्य यह होता है कि अनजाने ही उसके अनेकानेक विधि निषेधों को हम मान रहे हैं। बहरहाल उसे खोजने गया तो रैकों से गर्द-गुबार उठा। रैक की किताबों पर गर्द की वैसी ही मोटी पर्त पड़ी हुई थी जैसी नागरी प्रचारिणी सभा के आर्यभाषा पुस्तकालय की किताबों पर। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के केन्द्रीय ग्रन्थागार की किताबों की तरह कोई क्रम नहीं था। सोचा कि उन्हें झाड़-झूड़ कर एक उपक्रम दे दूँ। सफाई करते समय किसी का कोई पन्ना सरक जाता था, किसी का कवर पेज। **मेरे पूरे जीवन की कमाई। कौन होगा इसका वारिस? कोई नहीं, कोई नहीं। किताबें बोलती हैं तो चुप नहीं होतीं। वे जोर से समवेत स्वर में चीखीं। हमें कहीं सुरक्षित पहुँचा दो अन्यथा दीमक चाट जायेंगे।** बहुत-सी किताबों को चाट ही गये।

मुझे अपने यहाँ का नेताजी पुस्तकालय याद आ गया। लड़कपन में हम लोगों ने उसे खोला था। मेरे पास हिन्दी के सुप्रसिद्ध कथा लेखक मार्कण्डेय भी थे। अब उसका अस्तित्व नहीं है। बनारस के पुस्तकालयों की हालत जर्जर है। पं० विद्यानिवास मिश्र जयनारायण कालेज के परिसर में पुस्तकालय की एक इमारत बनवा गये हैं सांसद निधि से, पर उसमें पुस्तकें नहीं हैं। स्वयं उनके कीमती पुस्तकालय का क्या होगा? वे अपनी किताबों की बहुत चिन्ता करते थे। मैं एक क्लासिक माँग कर ले आया था पर दो ही दिनों के बाद मँगवा ली उन्होंने। मेरे यहाँ तो बिना मेरी अनुमति के पुस्तकें दे दी जाती हैं। बड़ी मेहनत के बाद उनका उद्धार होता है। अब तो मैं बशीर बद्र का एक शेर उद्धृत करता हूँ—

धूप से निकलो घटाओं में नहा कर देखो।
जिन्दगी क्या है, किताबों को हटाकर देखो॥

किताबें फिर चिल्लायीं—यह शेर भी तो किताब से ही मिला है। उधर कोने से आवाज आयी—जरा मेरी ओर देखिये। याद भी नहीं होगा कि मैं कब से तुम्हारे पास पड़ी हूँ—31 से। तुमसे उम्र में केवल 20 साल छोटी हूँ। देखा तो रवि बाबू की गीतांजलि थी—अंग्रेजी अनुवाद। मुझे यह अनुवाद अच्छा नहीं लगा था लेकिन यह मेरे साथ-साथ घूमती रही। इतने पुराने दोस्त को किसको दूँ? जब तक हूँ यह रहेगी। मेरे बाद इसका भी हश्र वही होगा जो सबका होता है। झाड़-पोंछ कर जहाँ का तहाँ रख दिया। रैक के एक खाने में मार्क्सवादी किताबें सोई हुई थीं, वो अचानक जग गयीं। सोचा मैनिफेस्टो और फ्रैंकफर्ट स्कूल रीडर को रख लूँगा और बाकी किताबें दीपक मलिक को दे दूँगा। किताबों की टोका-टाकी अच्छी नहीं लग रही थी। वे एक साथ बोल पड़ीं—**दीपक के हवाले पड़ने से तो अच्छा है हमें दीमक और तिलचट्टे पढ़ें।** अब उनकी अकादमिक प्रवृत्ति लुप्त-सी हो गयी है। अब वे विदेश यात्रा के शौकीन हो गये हैं। वक्तृत्वशक्ति अच्छी है—अंग्रेजी की भी और हिन्दी की भी। आजकल महात्मा गाँधी संस्थान का करगिल युद्ध लड़ रहे हैं। सम्भव है करगिल के बारे में मनमोहन-मुशर्रफ में कोई समझौता हो जाय लेकिन निदेशकीय करगिल की लड़ाई का अन्त दूर भविष्य में भी नहीं दिखाई देता।

एक पूरे रैक में भरी अंग्रेजी की किताबें। रैक हिल उठा। किताबों की जगह रैक ही बोला—मेरा क्या होगा? रैक की बोली में पुश्किन, टालस्टाय, दोस्तावस्की, चेखव, आख्यातोवा, टी०एस० इलियट, पाब्लो नेरूदा, हेमिंग्वे, वगैरह-वगैरह की बोलियाँ मिली हुई थीं। मेरे पास कोई उत्तर नहीं था। मैं चुपचाप उनकी धूल झाड़ रहा था। सोचा क्यों न सारी किताबें पी०एन० सिंह को दे दूँ। वहाँ वे पढ़ी भी जायेंगी और सुरक्षित भी रहेंगी। लेकिन उनकी अपनी लाइब्रेरी में जगह होगी? नहीं होगी तो हो जायेगी क्योंकि रैक में जगह पाने के पहले दिल में जगह चाहिए। बनारस में तो ऐसे लोग हैं जिन्हें किताबें दे भी दो तो पढ़ते नहीं। कहने पर भी नई किताबें नहीं ले जाते क्योंकि वे पढ़ना नहीं चाहते। ऊपर छ: खण्डों में गीताप्रेस का महाभारत रखा हुआ है। वह हँस रहा है। उस पर धूल नहीं जमी है। उसे मैं पढ़ता हूँ। वर्षों से पढ़ रहा हूँ। उसे पढ़ते-पढ़ते एक सरल महाभारत भी तैयार हो गया है। उसी के चलते मैंने बुद्धदेव बसु की महाभारतेर कथा का हिन्दी अनुवाद भी कर दिया है। आश्चर्य है कि सालभर के भीतर ही उसका दूसरा संस्करण भी छप गया। बनारस में एक पुस्तक प्रदर्शनी लगी थी। किताब भारतीय ज्ञानपीठ से छपी है। उसका स्टाल भी लगा था। पूछने पर पता चला कि बनारस में उसकी एक भी प्रति नहीं बिकी है। पटना के पुस्तक मेला में पच्चीस प्रतियाँ बिक गयी थीं। बिहार पढ़ने-लिखने में तथाकथित उत्तम प्रदेश (उत्तर प्रदेश) से कितना आगे है। सब मिलाकर अभी भी हमारे क्लासिक जीवित हैं।

ओफ्! ढेर सी पत्र-पत्रिकाएँ। एक जगह बेतरतीब, गर्द से ढँकी हुई। पहल, वसुधा, कथा-क्रम, तद्भव, हंस, आलोचना, समकालीन सोच वगैरह-वगैरह। इनकी जिल्दें कैसे बनेंगी। कुछ तो मैंने पहले ही बनवा ली थीं। अब बनने वाली नहीं हैं। एक सज्जन ने बनवाने का वायदा किया था लेकिन वर्षों बीत गये, न जिल्दबाज आया और न जिल्दसाज के घर किताबें गयीं। अहं ढपोर शंखोस्मि, वदाम्येव ददासिन्ते। पत्रिकाएँ फड़फड़ा उठीं। ये सारी पत्रिकाएँ तो किसी भी विश्वविद्यालय में नहीं आतीं। वहाँ मत भेजो, प्रोफेसर पढ़ते नहीं। पढ़ने वाले विद्यार्थी हमें खुद मँगाते हैं। विभागीय पुस्तकालय भी हैं, उसके लिए लाइब्रेरियन भी हैं। पर पुस्तकालय का ताला नहीं खुलता। छोड़ दो, हमारी किस्मत पर छोड़ दो। नहीं, ऐसा नहीं होगा। मैं तुम्हें ठीक जगह रखूँगा, उदय प्रताप कालेज में या ज्ञान प्रवाह में। वे चुप नहीं हो रही थीं। तुम्हें सीढ़ियाँ चढ़ने में तकलीफ होती है, पैर लड़खड़ाते हैं, क्रम लगाने में हाँफने लगते हो। जब तक हो, हमें भी रहने दो। वे बोलती जा रही थीं।

तुम अकेले हो। चारों ओर सूनापन बिखरा हुआ है। खाली समय में गाते रहते हो— *मैं अकेला / देखता हूँ आ रही है मेरे दिवस की सांध्यबेला /* तुम्हारे खालीपन को हमलोग भरते रहते हैं। किताबें तो ले ही जाते हो। हम लोग भी तुम्हारे पागलपन को देखते रहते हैं। मनुस्मृति पढ़ने का क्या मतलब है? तुलसीकृत मानस पढ़ो, इहलोक-परलोक दोनो बनेगा। जीवनानन्द दास पढ़ने की सनक विचित्र है। उस दिन देखा नहीं काहिविवि, बंगाली डेलीगेट क्या कह रहे थे—रवि बाबू के बाद बंगाली कविता में कुछ नहीं है। हमें उलटकर भी तुम्हें कुछ न कुछ मिल ही जाता है। पत्रिकाओं के बयान का असर हुआ। इससे मन बदला, शरीर में झुरझुरी आ गयी, एक क्षण के लिए मैं फंतासी नन्दन कानन में विचरने लगा। किताबों को सम्बोधित करते हुए कहा—

दोस्तों,

अभी न होगा मेरा अन्त। फुकियामा के लाख कहने पर भी शिव के त्रिशूल पर टँगी काशी किसी न किसी रूप में बची रहेगी।

अच्छी पुस्तकें
सबसे विश्वसनीय दोस्त होती हैं
कहीं भी और कभी भी
साथ चलने को तैयार
खाली समय में मनोरंजन करती हैं
उनके लेपन में उदासी दूर करती हैं
विपत्ति में उचित सलाह देती हैं
संघर्ष में साथ देती हैं
और / समय तथा समाज के प्रति
हमें जागरूक बनाती हैं।

— प्रेमचंद साहित्य संस्थान

कलेजे में दुनिया का दर्द लिए जा रहा हूँ

कथाकार द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण'

याद आता है नहीं कभी जानकर दु:ख किसी को है दिया कुछ मानकर—अपने विषय में, मुझे बस इतना ही संतोष है; नहीं तो ऐसा कुछ भी नहीं है, जिस पर गुमान कर सकूँ। नहीं, यह मेरा विनय-भाव नहीं है—प्रदर्शन भी नहीं है। मेरे जीवन की महज वास्तविकता है। 'नहि कल्याणकृत् कश्चिदद्दुर्गति तात गच्छति'—मेरी पूरी जिन्दगी में उतरा हुआ सूत्र है। बहुत बचपन में इस टुकड़े की व्याख्या महात्मा गाँधी से जानी थी—जो दूसरों की कल्याण-कामना करता है, उसका अनिष्ट कभी नहीं होता। मेरे लिए बहुत बड़ा संबल रहा यह वाक्य। मैंने पाया, विपदा आयी, विपदा के पीछे प्रभु की करुणा आयी। पत्थर की लकीर बनी इसी एक पंक्ति को एकाग्रचित्त से निहारते मैंने अपनी सारी उमग्र बितायी है।

एक थे क्षितींद्रमोहन मित्र मुस्तफी—'माया' पत्रिका के संस्थापक। बीस-इक्कीस वर्ष की अवस्था में मेरा उनसे निकट सम्पर्क हुआ। वे अपने ढंग के अद्भुत व्यक्ति थे। मुझसे हर बात में बड़े और मैं उनसे बुरी तरह प्रभावित रहा। मुस्तफीजी एक दिन बोले—''अपने देश की आज ऐसी स्थिति है कि यदि एक हजार आदमियों को लें तो उनमें नौ सौ निन्यानवे बदमाश मिलेंगे और भला मिलेगा सिर्फ कोई एक। उस एक को खोजने निकलेंगे आप तो पहले उन नौ सौ निन्यानवे से भेंट होगी। वे नौ सौ निन्यानवे तब आपको भेंटस्वरूप एक-एक बुराई देते जाएँगे। नतीजा यह होगा कि जब आप उस एकाकी भले के पास पहुँचेंगे तब खुद इतने भारी बदमाश बन चुके होंगे कि उस एकमात्र भले आदमी की अच्छाइयों का कुछ भी प्रभाव न पड़ सकेगा। इसलिए भाई मेरे, अगर जीवन को पवित्र रखना चाहते हो तो कम से कम आदमियों के सम्पर्क में आओ।''

कटा-कटा ही रहा

मैं नहीं जानता, मुस्तफीजी की यह 'थ्योरी' सही थी या नहीं, पर मैंने भरी जवानी में इसे तहेदिल से स्वीकार लिया। दीन-दुनिया से, समाज से कटा-कटा रहने लगा। जिन्दगी गुजरती गयी और मैं कटा-कटा ही रह गया। नाम से मुझे बहुत लोग जानते हैं। कथाकार 'निर्गुण' को पढ़ने-वालों की संख्या सम्भवत: लाखों में होगी (अतिश्योक्ति है क्या ?), पर व्यक्ति 'निर्गुण' को जाननेवाले सीमित हैं।

सम्पर्क रहा मेरा सिर्फ इन दो से—शिष्य-वर्ग और साहित्यिक सहृदय बन्धु। इन्हीं दो को लेकर मेरा 'आस-पास' है, इन्हीं दो को लेकर मेरा 'अता-पता' है।

काव्य-शास्त्र पढ़ता रहा, पढ़ाता रहा। कथा-साहित्य पढ़ता रहा लिखता रहा। दिन निकलते गये, जिन्दगी गुजरती गयी। मेरी संचित सम्पत्ति बस यही है कि—बत्तीस वर्ष मैंने विश्वविद्यालय में अध्यापन किया। आज सैकड़ों की संख्या में मेरे शिष्य हैं, जो विभिन्न प्रदेशों में—हिमालय की तराई से लेकर दक्षिण तक फैले हुए हैं। यह मेरी शिष्य-सम्पदा है।

तेरह वर्ष की अवस्था से लिखना शुरू कर दिया था और आज तक लिखता ही रहा हूँ। कई हजार पृष्ठ लिख लिये होंगे।

दिनकर की मीठी झिड़की

पन्द्रह साल पहले की बात याद आ रही है। दिल्ली में, दिनकरजी के फ्लैट में बैठा मैं अपनी आर्थिक स्थिति की बात सुना रहा था कि **अगर आज मर जाऊँ तो घर में कफन के लिए भी पैसे न होंगे।** दिनकरजी अधलेटे सुन रहे थे। चौंककर उठ बैठे। बोले—''यह अभी क्या कहा तुमने ? खबरदार, जो कभी तुमने भविष्य में ऐसी बात मुँह से निकाली। तुम अपने को अकिंचन कहते हो ! इतनी बड़ी सम्पत्ति अपने पीछे छोड़ जाओगे बच्चों के लिए, तुम किधर से गरीब हो ! न हो बंगला-कार। बंगला-कारवाले तो हजारों-लाखों हैं देश में ! 'निर्गुण' हजारों नहीं हैं, 'निर्गुण' तो 'रेयर' हैं। अब कभी नहीं कहोगे न ऐसी हीनता की बात ?''

मैंने भरे गले से कहा—''नहीं कहूँगा।'' पर मैं अपने शिष्यों की बात कहूँ अब। मेरे प्रिय शिष्यों में अनेक आज अपनी योग्यता के बल पर ऊँचे पदों पर आसीन हैं। सभी सौम्य, सभी कृती, सभी पूरे मानव। दिल भर आता है उनकी ममता और श्रद्धा को याद करके।

सो अपने सुख-दु:ख के साथी इन प्रिय शिष्यों पर मुझे जरूर फख्र है। यूनिवर्सिटी से रिटायर हो गया हूँ, पर शायद ही कोई ऐसा दिन बीतता होगा जब किसी शिष्य से मुलाकात न हो। अपना दु:ख-दर्द सुनाने आयेंगे, या फिर पी-एच०डी० के लिए शोध करनेवाले आयेंगे, गाइडेंस के लिए आयेंगे या किसी लक्षण-ग्रन्थ के दुरूह स्थलों के स्पष्टीकरण हेतु।

'गपशप' से मैं बचता हूँ और किसी की निन्दा-स्तुति से मुझे भला क्या लेना-देना।

मैंने अक्सर अपने शिष्यों के बीच यह प्रश्न दोहराया है कि ''दुनिया में सबसे सरल काम क्या है ?'' और फिर स्वयं ही उत्तर दिया है—''सबसे सरल काम है—पर-निंदा, दूसरों में दोष निकालना।''

और सबसे कठिन काम है—आत्मा-परीक्षण। हम जो दिन-रात सज्जनता का मुखौटा लगाये दूसरों को धोखा दे रहे हैं, यह भले ही छिपा रहे, परन्तु अपनी आत्मा को भी जो धोखा देना है—यह कैसे, छिपा रहेगा ?—आत्मा जानाति यत् पापम्।

सफलता का जीवन

मैं थोड़ी बात कहूँ। मैं कोई संत नहीं हूँ। आदर्श व्यक्ति हूँ—ऐसा दावा मेरा हरगिज नहीं है। हाँ, इतना मान लेता हूँ अकसर ऐसा हुआ है कि मेरा जीमर मुझसे छिटककर अलग जा खड़ा होता है और फिर वह मुझे हिकारत की नजरों से घूरकर देखता है। हालात ऐसे रहे हैं कि जो कुछ भी करता हूँ तो पीछे यों लगता है, सारी जिन्दगी गलतियाँ ही करता रहा हूँ—मैं अपराधी जनम का ! मैं दुनिया के किसी भी काम का आदमी सिद्ध नहीं हुआ हूँ। देखता हूँ, मेरे हर सिम्त नाकामयाबी के जाले बिछे हैं। **जीवन की असफलता हूँ मैं, असफलता का जीवन हूँ।**

शरतचंद्र ने श्रीकांत के लिए लिखा था—''चारों ओर से अपने लिए 'छि:-छि:' बनकर रह गया था।''—मुझे लगता है, मेरा भी यही हश्र हुआ है। क्या यह 'इनफीरियॉरिटी कॉम्प्लेक्स' है ? ऐसा ही हो शायद।

द्विविधा-विभक्त जीवन का अर्धांश यों अध्यापन से जुड़कर शिष्यों पर आधारित रहा; अर्धांश समर्पित रहा कथा-संरचना को। इसे कहाँ से शुरू करूँ ?—देश के और विदेशों के उन सभी महान कथाकारों का मैं चिर ऋणी हूँ, जिनकी रचनाओं से मुझे लिखने की प्रेरणा मिली और असीम आत्मानंद पाया।

अपनी पीढ़ी के पूर्वज कवि-मनीषी निराला, पंत और दिनकर के अदृश्य चरणों में मेरे कोटि-कोटि प्रणाम हैं—तीनों का आशीर्वाद मेरे साथ है। श्रीमती महादेवी वर्मा और बच्चन मेरे नमस्य हैं। श्री बालकृष्ण राव ने मुझे छोटे भाई का स्नेह प्रदान किया था। बचपन से लेकर आज तक प्रेमचंद बराबर मेरे श्रद्धेय रहे हैं। शरतचंद्र का मैं सम्पूर्ण अंत:करण से भक्त हूँ—उन्हें ऋषिकल्प मानता हूँ। **जन्मजात अभागा प्राणी हूँ। बदनसीबी मुझे सदा अपनी बाँहों में लपेटे रही**—'मुझसे विधि, विधि की सृष्टि क्रुद्ध !'

पर इतना सौभाग्य जरूर सुरक्षित रहा कि आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी और पूज्य बनारसीदास चतुर्वेदी जैसे मनीषियों का आंतरिक स्नेहाशी: मुझे उपलब्ध हुआ।

अपने समकालीन और समानधर्मा लेखक बन्धुओं की सहानुभूति, स्नेह और ममता बराबर पाता रहा। सर्वश्री इलाचंद्र जोशी, जैनेन्द्रकुमार, विष्णु प्रभाकर, अमृतराय, विद्यानिवास मिश्र, भारती और कमलेश्वर—सभी ने मुझे अपना करके माना। लक्ष्मीशंकर व्यास, जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी, मनोहरश्याम जोशी, भैरवप्रसाद गुप्त और राजेन्द्र अवस्थी—सभी ने मुझे आगे बढ़ाया।

डॉ० आर्येन्द्र शर्मा का मैं सहोदर छोटा भाई हूँ। उनके चरणों की छाया तले मेरा जीवन सुरक्षित रहा है—यह मेरे सौभाग्य की चरमसीमा है। मेरी जीवन-सहचारी सुशीला, जिसने मेरे नीड़ का नव-निर्माण किया, मेरे जीवन का एकमात्र संबल रही है।

मसरंत हुई, हंस लिये दो घड़ी
मुसीबत पड़ी, रो के चुप हो रहे !

एक विपन्न ब्राह्मण परिवार में जन्मा मैं अति-सामान्य व्यक्तित्व लेकर जिन्दा रहा। परन्तु जिन्हें कभी प्रत्यक्ष देख नहीं पाया, अपने उन हजारों-हजारों सहृदय पाठक-पाठिकाओं के प्यार-भरे और दिल की गहराइयों से लिखे हजारों पत्र मेरी बहुत बड़ी थाती हैं।

और अपने लेखन के विषय में मुझे सिर्फ इतना ही कहना है कि जो कुछ भी लिखा है पूरी आस्था और विश्वास से लिखा है और यह मानकर लिखा है कि इसकी कुछ उम्र होगी।

कुछ 'ऐब्नार्मल' हूँ

बात ऐसी है कि जो कलाकार होगा, सामान्य मानव से कुछ अलग-थलग अवश्य होगा। उसकी यह ऐब्नार्मलटी कोई दोष न होकर एक अपरिहार्यता है। मैं भी 'ऐब्नार्मल' हूँ ही। पर **कलाकार के कलेजे में जो एक दर्द बसा रहता है, वह दर्द ही उसका प्राण है।** इस दर्द को 'अश्रुसिक्त भावुकता' कहकर कोई भले ही मजाक उड़ा ले, परन्तु दर्दीली रचना के पीछे जो कलाकार का जीवन-दर्शन है, उसे सिर्फ जानने-वाले ही जानते हैं घायल की गति घायल जानें, कै कोई घायल होय!

मैं तो कोई बड़ा आदमी न था। मैंने अपने-सरीखे परिवेश में जीवित रहनेवाले मध्यवित्तीय पात्रों की तस्वीरें आँकीं। मैंने उन नगण्य-जैसे पात्रों को उभारा जिन पर सामान्यतया लोगों की नजर नहीं जाती। नारी सदा मेरी श्रद्धा का पात्र रही है। नारी का जो विरल रूप मेरी आत्मा में अंकित है—मैंने उसी का चित्रण किया। 'दरिद्रान् भर कौन्तेय!' मैं स्वयं निर्धन का बेटा था। मेरे कितने ही पात्र वे ही गरीब-गुरबा हैं।

प्यार और कला—प्रभु की इस सम्पूर्ण सृष्टि में इससे बढ़कर सुरम्य विभूति मनुष्य के लिए कुछ नहीं है—मैंने कभी यह लिखा था। चकित रह गया, जब मैंने सॉमरसेट मॉम की रचना में यही बात ज्यों-की-त्यों अंकित देखी। पर मेरे इस प्यार की व्याख्या थोड़ी विस्तृत है। नारी और पुरुष के प्यार का तो कहना ही क्या है परन्तु इससे और परे यह जो अपने देश, अपनी संस्कृति और अपनी धरती का प्यार है—यह प्यार की बात कहना गुनाह है क्या ?

मैं प्रेमी उच्चादर्शों का
मैं प्रेमी मानव संस्कृति का
ईश्वर पर चिर-विश्वास मुझे

....हजारों-हजारों मील लम्बा यह कला और साहित्य का राजपथ। इसकी पहली ईंट उष:सूक्त गानेवाले वैदिक ऋषियों ने रखी। संसार के समस्त कलाकार, कवि, नाटककार और कथाकारों ने इस पथ को सँवारने में, संवर्धन में अपने जीवन को समर्पित कर दिये। दिन-प्रतिदिन आगे बढ़ते इसी राजपथ के एक किनारे पर मेरी भी छोटी-सी ईंट लग गयी है—यही मेरी रचनाओं की, मेरी जिन्दगी की एकमात्र चरम-सार्थकता है।

सम्मान-पुरस्कार

भाषा भारती सम्मान 2003-04

भारतीय भाषाओं के केन्द्रीय संस्थान (सेन्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डियन लैंग्वेजेज) मैसूर ने विभिन्न भारतीय भाषाएँ सीखने और सामाजिक सौहार्द तथा राष्ट्रीय एकता के लिए भाषा भारती सम्मान पुरस्कार प्रारम्भ किया है। यह पुरस्कार संविधान की आठवीं अनुवर्ती सूची में स्वीकृत भाषा में मौलिक लेखन तथा अनुवाद के लिए दिये जाते हैं। ये पुरस्कार हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी के लिए नहीं है।

जनवरी 1997 से दिसम्बर 2002 के बीच प्रकाशित पुस्तकों पर ये पुरस्कार निम्नलिखित लेखकों को दिये जायेंगे—

मौलिक कृतियाँ

भाषा	लेखक	मातृभाषा	पुरस्कृत कृति
असमिया	येशेदोरची थोंगेही	शेरदुकपेन	मौन ओंठ मुखर हृदय
बँगला	देवर्षि सरावगी	मारवाड़ी	गल्पकार
गुजराती	गणेश एनादेवी	मराठी	आदिवासी जाने दे
मलयालम	नील पद्मनाभन	तमिल	अरंक्ते कोनिल
मराठी	आर०एस० लोकापुर	कन्नड़	ज्ञानेश्वरितिल कहीं उपमाने
नेपाली	सी०काम लोवा	मिजो	अनुभव कादुई मानी
उड़िया	असीम बसु	बँगला	कथारे कथारे
तेलुगु	जयन्त परमार	गुजराती	और

अनुवाद

भाषा	अनुवादक	मातृभाषा	पुरस्कृत कृति
कन्नड़	आर०वी०एस० सुन्दरम्	तेलुगु	बिरुगली (तेलुगु से)
कश्मीरी	शफी शौक	कश्मीरी	कन्यादान (मराठी से)
मैथिली	रामलोचन ठाकुर	मैथिली	जा सकई छी किन्तु किये जौ (बँगला से)
पंजाबी	वनिता	पंजाबी	कविता फिर एक वर (उड़िया से)

पुरस्कार अगस्त 2005 में इंस्टीट्यूट के मैसूर केन्द्र में दिये जायेंगे। पुरस्कार स्वरूप प्रत्येक भाषाकार को 25,000 रुपये, शाल और स्मृति फलक प्रदान किये जायेंगे।

कथाकार संतोष श्रीवास्तव का अभिनन्दन

इस वर्ष लगातार तीन पुरस्कारों (प्रियदर्शिनी साहित्य अकादमी पुरस्कार, महाराष्ट्र दलित साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा वसंतराव नाईक प्रतिष्ठान पुरस्कार) से सम्मानित कथा लेखिका **संतोष श्रीवास्तव** का पिछले दिनों महाराष्ट्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा सार्थक संवाद संस्था के संयुक्त तत्त्वावधान में बी०एम० रुइया कालेज, मुम्बई में स्मृति चिह्न तथा पुष्पगुच्छ देकर अभिनन्दन किया गया। साथ ही कमला देवी गोयनका पुरस्कार से सम्मानित डॉ० राजम पिल्लै का भी अभिनन्दन किया गया। संतोष श्रीवास्तव ने दोनों संस्थाओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि—''वैयक्तिक अनुभूतियों को सामाजिक सन्दर्भ देकर सहयोग, साहचर्य और सहकारिता की वैकल्पिक नारी संस्कृति को जन्म दिया जा सकता है। स्त्री के लिये सार्थक भागीदारी का विकल्प खोजकर उसे रचूँ और उसे शक्तिरूपा बनाने के लिये प्रेरित करूँ। वैसे भी इसके लिए एक बड़े कैनवस की जरूरत महसूस होती है। और साहित्य से बड़ा कैनवस और कौन सा हो सकता है।''

रही मौत। मौत तो होती ही है। 'मरणं प्रकृति: शरीरिणाम्।' सो, एक दिन मुझे भी मरना है। 'मौत आये जो अयादत को' स्वागत है उसका। शांत-भाव से प्रस्तुत हूँ। ऐसा मान लिया है मैंने कि जब, जिस दिन, जिस घड़ी बुलावा आ जाए—'यहाँ तैयार बैठे हैं।'

'जा दिन मन-पंछी उड़ि जई है!'—थोड़ा शोरगुल जरूर होगा। रोनेवाले रोयेंगे और स्नेहीजनों की आँखें पुरनम हो जाएँगी। संतान-सरीखे मेरे कुछ शिष्य गीली आँखें, व्यथाभरा मन और उदास चेहरा लिये जल्दी-जल्दी 'मिट्टी' उठाने की तैयारी करेंगे।

कफनी उढ़ा पुरानी कस अंग रस्सियों से
ले घाट पर चलेंगे रोकर कुटिल पड़ोसी
मृदु फूल-सी तुम्हारी यह देह फूँक देंगे।

सम्भवत: उस दिन विश्वविद्यालय में शोक-सभा होगी। फिर आधे दिन की छुट्टी हो जाएगी। कुछ लोग सिनेमा देखने चले जाएँगे, कुछ अपने जरूरी काम निबटाएँगे।

इसके बाद यत्र-तत्र चर्चा होती रहेगी 'निर्गुण' की। दो-चार संस्मरण भी निकलें शायद।

आगे फिर क्या होगा—मैं भला क्या कल्पना कर सकता हूँ। हो सकता है, कभी कोई शोधकर्ता मेरी कहानियों को लेकर 'थीसिस' लिखे। लिखे कि—'निर्गुण' आदमी जानदार था। ईमानदार था। कलेजे में दुनिया का दर्द लिए चला गया।

धीरे-धीरे समय बीतेगा, आधी शताब्दी बीतेगी, फिर पूरी शताब्दी गुजर जाएगी।

और यह सब आज का लिखा कहीं मिट्टी में दफन हो जाएगा। **('कादम्बिनी' के एक अंक से)**

यत्र-तत्र-सर्वत्र

नवागतों के लिए प्रेरणा : श्रीकान्तजी का काव्य

हिन्दी के सुविख्यात कवि तथा चिन्तक स्वर्गीय श्रीकान्त जोशी को उनके 75वें जन्मदिन की पूर्व संध्या पर 28 जून, 2005 की शाम इन्दौर के श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति के सभागार में संगीत एवं कविता-पाठ के माध्यम से याद किया गया।

कार्यक्रम का आरम्भ करते हुए सुप्रसिद्ध सुगम संगीत गायिका श्रीमती शीला वर्मा ने श्रीकान्तजी के दो गीतों की संगीतबद्ध प्रस्तुति की। फिर पटना से पधारे हिन्दी के विख्यात कवि श्री अरुण कमल ने श्रीकान्तजी के साथ बिताए समय को बड़ी आत्मीयता से याद किया तथा उनकी कविताओं पर टिप्पणी करते हुए कहा कि वे न केवल हमारे समय के बड़े कवि हैं बल्कि नवागत रचनाकारों के लिए प्रेरक भी हैं। श्रीकान्तजी द्वारा पण्डित माखनलाल चतुर्वेदी की रचनावली के प्रकाशन को उन्होंने बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य मानते हुए कहा कि यह हिन्दी साहित्य जगत के लिए एक महान अवदान है।

कविता पाठ करते हुए श्री अरुण कमल

इस अवसर पर अरुण कमलजी ने अपनी प्रसिद्ध कविता 'धार' से काव्य-पाठ की शुरुआत की। उनकी 'जैसे', 'अनुभव', 'खीरा', 'एकालाप', 'उर्वर प्रदेश', 'बुढ़ापा', 'नए इलाके में', 'पुतली में संसार', 'सूचकांक', 'उधर के चोर', 'अनुभव', 'इच्छा' तथा 'बिछावन' आदि कविताओं में जीवन-यथार्थ की विभिन्न रूपच्छटाएँ देखने को मिलीं तथा यह भी एक सच्चा कवि किस तरह जनपक्षधरता के लिए बड़ी-बड़ी सत्ताओं से टकराने में भयभीत नहीं होता।

इस स्मृति-प्रसंग में हिन्दी के सुपरिचित साहित्यकार चंद्रकांत देवताले, राजेश जोशी, विलास गुप्ते, शरद पगारे आदि तथा समीपस्थ शहरों से आये रचनाकार तथा श्रीकान्तजी के आत्मीय-स्वजन पाठक समुदाय के लोग भी उपस्थित थे।

पण्डित हजारीप्रसाद द्विवेदी पर फिल्म

राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने हिन्दी के यशस्वी लेखक एवं प्रकाण्ड विद्वान पण्डित हजारीप्रसाद द्विवेदी के जीवन एवं कृतित्व पर एक डाक्यूमेंटरी फिल्म बनाने का निर्णय किया है। इस समय एनसीईआरटी हिन्दी की कवयित्री स्वर्गीय सुभद्राकुमारी चौहान और स्वर्गीय भीष्म साहनी पर भी डाक्यूमेंटरी फिल्में बना रहा है। 2006 में पण्डित हजारीप्रसाद द्विवेदी की जन्मशती शुरू होगी। यह देखते हुए द्विवेदीजी के बहुआयामी व्यक्तित्व से नयी पीढ़ी के छात्रों को परिचय कराने के लिए उन पर एक फिल्म बनायी जायगी। द्विवेदीजी ने आलोचना, निबन्ध और उपन्यास के क्षेत्र में अपनी

नवोन्मेष और नवाचार का नवाँ दशक

डॉ० बच्चन सिंह का 87वाँ जन्मदिवस

माइक पर डॉ० सदानन्द शाही, बैठे हुए बाएँ से प्रो० पूर्णमासी राय, प्रो० सुरेन्द्र सिंह (कुलपति काशी विद्यापीठ), प्रो० राय आनन्दकृष्ण, डॉ० बच्चन सिंह, डॉ० काशीनाथ सिंह

प्रेमचंद साहित्य संस्थान ने काशी के सुप्रसिद्ध समालोचक प्रो० बच्चन सिंह के 87वें वर्ष में प्रवेश करने के उपलक्ष्य में 3 जुलाई 2005 को मैत्री भवन, वाराणसी में सम्मान समारोह का आयोजन किया। अध्यक्षता प्रो० राय आनन्दकृष्ण ने की, मुख्य अतिथि थे महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो० सुरेन्द्र सिंह।

87वें जन्म दिवस के अवसर पर 87 मोमबत्तियाँ जलाकर डॉ० सिंह के प्रति शुभकामना व्यक्त करते हुए अध्यक्ष प्रो० राय आनन्दकृष्ण ने कहा—आज 86 मोमबत्तियाँ जली हैं अच्छा लग रहा और जब 100 मोमबत्तियाँ जलेंगी तो और भी अच्छा लगेगा।

कथाकार काशीनाथ सिंह ने कहा—प्रो० बच्चन सिंह आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की समीक्षा की परम्परा की मूर्तिमान कड़ी हैं। मैं उस काशी की कल्पना नहीं कर सकता जिसमें गंगा हो, बाबा विश्वनाथ हों, काशी की गलियाँ हों, डॉ० बच्चन सिंह न हों। मैं अपनी उम्र भी उन्हें अर्पित करना चाहता हूँ। कहा जाता है हमें अकेले पड़ते जा रहे हैं, पर सत्य यह है कि हमारा अकेलापन हमारी ताकत, हमारी ऊर्जा है।

नौ दशक तक फैले अपने सक्रिय और रचनात्मक जीवन में प्रो० सिंह ने अपनी अनेक आलोचनात्मक कृतियों से हिन्दी को समृद्ध किया है। बच्चन सिंह के आलोचनात्मक विवेक का एक छोर ठेठ भारतीय मनीषा से जुड़ा हुआ है तो दूसरा छोर बीसवीं शताब्दी में होने वाले वैचारिक उथल-पुथल से संवाद करता है। पश्चिम में आलोचना के क्षेत्र में होने वाली बहसों को हिन्दी पाठकों तक लाने में बच्चन सिंह की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रही है। आलोचक बच्चन सिंह की संवेदना नये से नये विचार या नये से नये व्यक्ति से सहज ही संवाद स्थापित कर लेती है। इसलिए आलोचक बच्चन सिंह की उपस्थिति हिन्दी में नवोन्मेष और नवाचार की उपस्थिति है।

संस्थान के निदेशक प्रो० सदानन्द शाही ने यह कहते हुए बताया कि प्रो० बच्चन सिंह के समूचे रचनात्मक जीवन का आकलन करते हुए शीघ्र ही समकालीन सोच पत्रिका का एक विशेष अंक डॉ० पी०एन० सिंह के सम्पादन में निकल रहा है। यह भी घोषणा की कि डॉ० बच्चन सिंह के समूचे लेखन से एक चयन करके 'संचयिता' प्रकाशित करेंगे। इन दोनों पुस्तकों का लोकार्पण प्रेमचन्द संस्थान द्वारा आयोजित 'आलोचना का भविष्य और भविष्य की आलोचना' शीर्षक संगोष्ठी में होगा। यह संगोष्ठी बच्चन सिंह को समर्पित होगी।

डॉ० सिंह को सम्मान स्वरूप नटराज की मूर्ति, मुंशी प्रेमचंद की प्रतिमा और उत्तरीय अर्पित किया गया। काशीनाथ सिंह ने लकड़ी की लुकाठी भेंट की। अपने सम्बोधन में डॉ० सिंह ने कहा—मेरा सम्मान तभी सार्थक होगा, जब यहाँ उपस्थित साहित्यकार साहित्य सृजन करें। जीवन में सफल होने के लिए सतत अध्ययन, चिन्तन, मनन की अपेक्षा है।

समारोह में प्रो० कुमार पंकज, डॉ० बलराज पाण्डेय, डॉ० नीरजा माधव, डॉ० महेन्द्रनाथ राय, प्रो० चौथीराम यादव, डॉ० जितेन्द्रनाथ मिश्र, डॉ० विश्वनाथ प्रसाद, डॉ० रामसुधार सिंह, प्रो० एम०पी० सिंह, प्रो० दीपक मलिक, डॉ० पी०एन० सिंह प्रभृति साहित्यकार तथा विद्वत्तजन उपस्थित थे। आरम्भ में स्वागत प्रो० चौथीराम यादव ने किया और धन्यवाद प्रदान किया डॉ० बलराज पाण्डेय ने। इस समारोह के आयोजन में डॉ० सुमन जैन का विशेष सहयोग रहा। संचालन प्रो० अवधेश प्रदान ने किया।

विशिष्ट प्रतिभा का परिचय दिया था। इस फिल्म में शूटिंग शान्ति निकेतन, वाराणसी, बलिया, चण्डीगढ़ तथा उनके पैतृक गाँव अझौलिया में होगी जिसे दुबे का छपरा भी कहा जाता है। फिल्म में द्विवेदीजी के शिष्य एवं हिन्दी के प्रख्यात आलोचक डॉ० नामवर सिंह, विश्वनाथ त्रिपाठी और केदारनाथ सिंह तथा द्विवेदीजी के पुत्र मुकुंद द्विवेदी की भी भेंटवार्ता होगी। हिन्दी अकादमी के उपाध्यक्ष मुकुंद द्विवेदी ने बताया कि अगले साल 19 अगस्त से हजारीप्रसाद द्विवेदी स्मृति न्यास जन्मशती मनाने के लिए समारोहों का सिलसिला शुरू करेगा। एनसीईआरटी बाबा नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, नामवर सिंह, केदारनाथ सिंह आदि पर भी डाक्यूमेंटरी फिल्में बना चुका है।

भारतीय सबसे ज्यादा पढ़ाकू

हाल ही में किये गये एक सर्वेक्षण में पया गया कि भारतीय सबसे ज्यादा पढ़ाकू होते हैं। भारतीय किताबें, अखबार अथवा पत्रिकाएँ पढ़ने में अमेरिकी और ब्रिटिश नागरिकों से दोगुना अधिक और जापानियों से तीन गुना अधिक समय खर्च करते हैं। हालांकि **साहित्य के रस में गोता लगाना उनको बहुत नहीं सुहाता।**

अंतर्राष्ट्रीय बाजार शोध संस्था एनओपी वर्ल्ड ने तीस देशों में पढ़ने की आदत पर किये गये अपने सर्वेक्षण में पाया कि भारतीय अन्य देशों के लोगों के मुकाबले सबसे अधिक हर हफ्ते औसतन 10.7 घण्टे पढ़ने में बिताते हैं।

चंद्रकांता ट्रेल

पर्यटन महानिदेशालय देवकीनंदन खत्री के सुप्रसिद्ध उपन्यास में वर्णित प्रमुख स्थानों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करेगा। चंद्रकांता ट्रेल के अन्तर्गत विजयगढ़, अहरौरा, अगोरी किला, नौगढ़, शकतेशगढ़ तथा चुनार के अवशेषों को सुरक्षित करने की योजना है। पर्यटन उन अवशेषों में चंद्रकांता और चंद्रकांता की भटकती आत्माओं के काल्पनिक दृश्य और गूँज देख-सुन सकेंगे।

हिन्दी का पीएचडी उद्योग

थीसिस लिखी तो नहीं जाती, लिखवाई जाती। लिखनेवाले को लिखने के पैसे मिलते और थीसिस पैसे देने वाले को मिल जाती। हिन्दी में ऐसे अनेक 'थीसिस लेखक' रहे हैं और ईश्वर की कृपा से वे आज भी हैं। वे अपना शुद्ध श्रम बेचते हैं, सेवा बेचते हैं। ईमानदारी का सौदा है। यह दसियों लाख का उद्योग है। इसका साफ्टवेयर क्या करेगा? **—सुधीश पचौरी**

मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद दीक्षांत समारोह

मैसूर हिन्दी परिषद का दीक्षांत समारोह 18 जून 2005 को बंगलूर में सम्पन्न हुआ। डॉ० बालेश्वर राय ने दीक्षांत भाषण में कहा— भारत जैसे बहुभाषी देश में अंग्रेजी के स्थान पर कोई भाषा अथवा महत्व स्थापित कर सका है तो वह हिन्दी है। विभिन्न भाषाओं के साहित्य का हिन्दी में अनुवाद तथा हिन्दी के बहुमूल्य ग्रन्थों का अन्य भाषाओं में अनुवाद महत्त्वपूर्ण कार्य है। हिन्दी भाषा अपनी साहित्यिक परम्परा के कारण राजभाषा का स्थान ग्रहण कर चुकी है।

इस दीक्षांत समारोह में परिषद के महापोषक डॉ० रत्नाकर पाण्डेय ने 3344 छात्र-छात्राओं को 'हिन्दी रत्न' उपाधि प्रदान की।

मुख्य अतिथि कर्नाटक सरकार के मुख्यमंत्री श्री धरम सिंह ने कहा—हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में कर्नाटक सरकार हर प्रकार की सहायता प्रदान करती है। मैं आश्वासन देता हूँ कि कर्नाटक सरकार की तरफ से हिन्दी प्रचार के कार्य को प्रोत्साहन मिलेगा।

इस अवसर पर कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री धरम सिंह ने डॉ० बि० रामसंजीवय्या पुरस्कार समिति की ओर से दीर्घकालीन कन्नड़ एवं हिन्दी साहित्य सेवा और हिन्दी, कन्नड़ प्रचार-प्रसार कार्य में अविस्मरणीय सेवाओं के लिए 2003-04 वर्ष के लिए प्रो० ए० लक्ष्मीनारायण एवं वर्ष 2004-05 के लिए प्रो० ए०एम० रामचंद्र को विशिष्ट हिन्दी सेवी सम्मान, रु० 25,000/- नकद, शाल एवं प्रशस्ति-पत्र से पुरस्कृत किया गया। कन्नड़ तथा हिन्दी प्रचार-प्रसार कार्य में निरन्तर परिश्रम करते आ रहे भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड के डॉ० बी०आर० मृत्युंजय एवं इसरो उपग्रह केन्द्र के डॉ० जी०आर० श्रीनाथ, शाला मुख्योपाध्याय, श्रीमती शकुन्तला अनंत शानभाग और प्रचारक श्री एम०वी० महाले, श्री जे०बी० त्रिशूलमूर्ति, श्रीमती एस०सी० पद्मावतम्मा, श्री एस०ए० रहीमन साब, श्री एच०एन० नारायण स्वामी, श्री बी० नागराज का भी मुख्यमंत्री ने सम्मान किया।

पाब्लो नेरुदा की जन्मशती

संगोष्ठी में बायें से डॉ० हितेन्द्र पटेल, रवीन्द्र कालिया (अध्यक्ष) तथा एकांत श्रीवास्तव संचालन करते हुए ममता कालिया (निदेशक)

भारतीय भाषा परिषद और पश्चिम बंग हिन्दीभाषी समाज ने विश्वकवि पाब्लो नेरुदा की जन्मशती पर 9 जुलाई 2005 को भारतीय भाषा परिषद के सभाकक्ष में संगोष्ठी आयोजित की। 'वागर्थ' के सम्पादक रवीन्द्र कालिया ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की। प्रसिद्ध कवि एकांत श्रीवास्तव ने पाब्लो नेरुदा के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि नेरुदा ने साठ वर्षों में पैंसठ पुस्तकें लिखीं जिनमें 95 प्रतिशत कविताओं की पुस्तकें थीं। पिछले बीस वर्षों से हिन्दी की लघु पत्रिकाओं में नेरुदा की कविताएँ छायी रही हैं। डॉ० चन्द्रबली सिंह ने नेरुदा के साहित्य से हिन्दी के पाठकों को परिचित कराने में महत्त्वपूर्ण काम किया है। नेरुदा की जीवनशैली और रचनाशैली में कोई अन्तर नहीं है। वे प्रेम और प्राकृति के कवि हैं। 'वह पृथ्वी लौटा दो' जैसी कविताओं में उनकी हूक हम तक पहुँचती है। चिली के जंगलों पर उनकी संस्मरण की पुस्तक से मालूम पड़ता है कि अपने देश के जंगलों से उनका कितना प्रेम था। डॉ० हितेन्द्र पटेल ने कहा कि पाब्लो नेरुदा के जीवन को जानना भी साहित्य तक पहुँचने का एक तरीका हो सकता है। पैंतीस वर्ष की आयु में नेरुदा पहली बार मार्क्सवादी दल के सदस्य बने। उसके पहले वे गहरी दार्शनिक तथा प्रेम व प्रकृति प्रेम की कविताएँ लिख चुके थे। दुनिया बदलेगी यह विश्वास और उम्मीद उनके अन्दर सर्वोपरि थी।

गोष्ठी के अध्यक्ष रवीन्द्र कालिया ने कहा कि पाब्लो नेरुदा के जीवन और साहित्य में इतने मोड़ थे कि उन पर हर अध्ययन अधूरा लगता है। हिन्दी में पाब्लो नेरुदा बहुत लोकप्रिय हैं। पत्र-पत्रिकाओं ने उन पर विशेषांक निकाले हैं। विश्व के अनेक कवियों की रचनाएँ हिन्दी में उपस्थित हैं। इससे हमारा कवि समृद्ध होता है। पाब्लो नेरुदा के अन्दर यदि इतनी प्रबल जनपक्षधरता नहीं होती तो वे इतने बड़े कवि न होते। भारतीय भाषा परिषद की निदेशक ममता कालिया ने संगोष्ठी का संचालन किया।

हिन्दू धर्म-विश्वकोश संगोष्ठी

परमपूज्य स्वामी चिदानन्द सरस्वती (मुनिजी) के विशेष आत्मीयतापूर्ण आमंत्रण पर सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश की यात्रा दिनांक 11 जून को सम्पन्न की। इस अवसर पर प्रो० मिश्र ने हिन्दू धर्म विश्वकोष के सम्पादक प्रो० के०एल० शेषगिरिराव से विस्तृत परामर्श किया तथा जवा एवं बाली की हिन्दू संस्कृति पर लिखे अपने ग्रन्थ की प्रति उन्हें भेंट की। ज्ञातव्य है कि प्रो० मिश्र ने 18 खण्डों में प्रकाश्य इस महाग्रन्थ के वैदेशिक खण्ड में जावा तथा बाली द्वीपों के हिन्दूधर्म पर अपने विस्तृत आलेख लिखे हैं।

प्रो० मिश्र ने स्वामी चिदानन्दजी को अपने प्रमुख ग्रन्थों का एक सेट तथा 'अभिराजगीतमाधुरी' (कैसेट) भी भेंट की।

विश्वकोश के खण्ड सम्पादकों की इस अन्तिम गोष्ठी में राष्ट्र के प्राय: पैंतीस संस्कृत विद्वान् उपस्थित थे।

ढाल तथा अन्य कहानियाँ
डॉ० रश्मि मल्होत्रा

प्रकाशक : नेहा प्रकाशन
295 बैंक इन्क्लेव लक्ष्मीनगर, दिल्ली-92
मूल्य : 125.00

इन कहानियों में आसपास के परिवेश और उसमें लगातार हो रहे परिवर्तनों को जीवन्तता के साथ अभिव्यक्त किया गया है। समाज में मौजूद औरत की अक्स दिखाया है। समाज में दम तोड़ते विखण्डित जीवन मूल्यों से जूझते पात्रों की त्रासदी कहती ये कहानियाँ मर्मस्पर्शी और प्रभावी हैं।

कथन

मैं शुद्ध साहित्यिक समालोचक नहीं हूँ

— नामवरसिंह

मैं शुद्ध साहित्यिक समालोचक नहीं हूँ, न होना चाहता हूँ, न रहना चाहता हूँ। मैं साहित्य की किताबों को हथियार बनाना चाहता हूँ, हथियार इसलिए नहीं कि समीक्षा ऐसी लिखना चाहता हूँ, लिखता रहा हूँ, इसलिए मैंने अज्ञेय के रहते हुए भी मुक्तिबोध को लिया। मूल्यांकन करना भी आलोचना का हिस्सा है। साहित्य में हर एक के लिए जगह और उसके साथ ही हर एक की अपनी जगह है।

लोग कहते हैं कि नामवर नहीं लिखते आजकल। अशोक वाजपेयी कहते हैं बहाना करते हैं। कलम घिसते रहें, वह जीवनभर कालम लिखते रहे। मैं लोक आलोचक, लोकमुखी आलोचक के रूप में कहना चाहता हूँ, पहले मैं यह काम विश्वविद्यालयों की कक्षाओं में किया करता था, अब सारा समाज, गाँव और विश्वविद्यालय है। इसी तरह के विश्वविद्यालय में अलख जगाता रहूँगा। न लिखा जाए, इसकी कोई चिन्ता नहीं है, लेकिन यह आवाज जहाँ-जहाँ पहुँचेगी, अपने जीने का एहसास करा रहा हूँ।

'हमारे समय में आलोचना' राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए

महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ में आयोजित कुलपति सम्मेलन से

शिक्षा रोजगारपरक होनी चाहिए। विश्वविद्यालयों को बेरोजगारी बढ़ानेवाली नहीं बल्कि ऐसी शिक्षा देने की जरूरत है जो रोजगार निर्मित करने वाले ग्रेजुएट तैयार कर सके। तभी रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। ज्ञान का विकास व्यक्तिगत क्षमता और रुचि पर आधारित है।

एशिया के देशों में त्रिस्तरीय शिक्षा व्यवस्था लागू है। पहला रोजगारपरक व प्राथमिक आवश्यकता के अनुरूप, दूसरा उच्च व्यावसायिक आवश्यकता के अनुरूप तथा तीसरा श्रेष्ठज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से।

—डॉ० पंजाब सिंह

कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

❑ ❑ ❑

आचरण व वाणी से सिखाने वाले आचार्य चाहिये नहीं तो गुरु का अँगूठा काटने वाला शिष्य पैदा होगा। अब महाभारत के युग जैसा एकलव्य नहीं है। आज भी एकलव्य है लेकिन खतरा यह है कि गुरु को ही अँगूठा न दिखा दे या उनका अँगूठा ही काट ले।

—प्रो० वाचस्पति उपाध्याय

अध्यक्ष, भारतीय विश्वविद्यालय संघ

❑ ❑ ❑

विश्वविद्यालयीय शिक्षा तंत्र से हिन्दी और क्षेत्रीय क्लासिकी गायब होना देश और समाज के लिए खतरनाक संकेत है। हमारे विश्वविद्यालय इन्हें सँजोये रखने में नाकाम रहे हैं, लिहाजा युवाओं पर अंग्रेजी प्रभाव हावी होता जा रहा है। हिन्दी सहित सभी क्षेत्रीय भाषाओं की क्लासिकी को विश्वविद्यालयीय शिक्षा व्यवस्था में पुन: स्थापित करना चाहिए। **—प्रो० अतुल शर्मा**

कुलपति, राजीव गाँधी अरुणाचल विश्वविद्यालय

मानव मस्तिष्क 320 करोड़ पुस्तकों के बराबर

मेमोरीमैन विश्वरूप राय चौधरी का मानना है कि हमारा मस्तिष्क 320 करोड़ किताबों का जितना ज्ञान भण्डार सहेज सकता है, लेकिन व्यवहारिक तौर पर हम इसका छोटा हिस्सा ही उपयोग कर पाते हैं। उनका यह भी कहना है कि प्रत्येक व्यक्ति के दिमाग में दो हिस्से होते हैं। आमतौर पर लोग लॉजिकल पार्ट का ज्यादा और क्रियेटिव पार्ट का कम इस्तेमाल करते हैं। श्री चौधरी का कहना है कि सामान्य व्यक्ति 40 पुस्तकालयों में समा सकने वाली सामग्री याद रख सकता है।

काव्य गुण ग्राहक

बड़े दु:ख की बात है कि बहुत कम लोगों को कविता पढ़ना पसन्द है। असल में तो यह साहित्य का मर्म है और जितनी बार आप अच्छी कविता पढ़ते हैं उतना ही उसका आनन्द उठाते हैं। यह बात गद्य के बारे में नहीं कही जा सकती। बहुत ही कम ऐसा होता है कि लोग किसी कहानी या उपन्यास को दोबारा पढ़ते हों। इसके विपरीत अच्छी कविताएँ बार-बार पढ़ने को आमंत्रित करती हैं। साहित्यिक प्रवृत्ति वाला अधिकांश युवा वर्ग कविताएँ लिखता है। इनमें से ज्यादातर का प्रयास यौवन का विवरण होता है। **—खुशवंत सिंह**

आपका पत्र

बी०-151, महाराना प्रताप एन्कलेव
पीतमपुरा, दिल्ली-110034

15.07.2005

प्रिय भाई,

'भारतीय वाङ्मय' का नया अंक (जून-जुलाई) मिला। कई कारणों से यह अंक संग्रहणीय बन पड़ा है। एक तो आपका सम्पादकीय ही है जो इतिहास की निर्ममता को रेखांकित करता है, बहुत ठीक लिखा आपने—''भारतीय जनता के विद्रोह का दमन, शासन, संघर्ष, 15 अगस्त 1947 की आजादी और देश विभाजन, इनका वस्तुनिष्ठ इतिहास नहीं लिखा गया।''कई महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाये हैं आपने और किस तरह इतिहास लिखना चाहिए यह भी स्पष्ट किया है। इतिहास की निर्ममता को हमें रेखांकित करना ही होगा।

हमारी जानकारी के लिए बहुत कुछ है इस अंक में, बहुत कुछ ऐसा है, जिसका हमें कुछ पता ही नहीं था। एक और अच्छी बात है कि नाना विचारधाराओं के व्यक्ति समाये रहते हैं, आपकी इस पत्रिका में। अच्छा लगता है सबको एक स्थान पर देखकर। मेरे जन्मदिन को भी आपने महत्त्व दिया। जो भी हो मेरी हार्दिक बधाई आपको, विशेषकर सम्पादकीय के लिए।

आपका

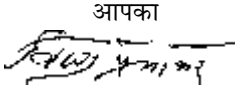

प्राइमरी स्तर पर मातृभाषा में हो पढ़ाई

केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड (कैब) ने देश के बच्चों में सांस्कृतिक चेतना पैदा करने एवं उन्हें समाज के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में पढ़ाई और स्कूलों में सप्ताह में कम से कम दो पीरियड सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए तय करने की सिफारिश की है।

कैब ने ग्राम पंचायतों में एक सांस्कृतिक संग्रहालय भी खोलने का प्रस्ताव किया है जिसमें स्थानीय कलाकृतियाँ हों। साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता लेखक यू०आर० अनंतमूर्ति की अध्यक्षता वाली केब उप समिति ने इन सिफारिशों को मंजूर कर लिया गया। उपसमिति में सुप्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका शुभा मुदगल, हिन्दी की लेखिका कृष्णा सोबती, गीतकार जावेद अख्तर, स्पिक मैके के किरण सेठ तथा एनसीईआरटी के निदेशक प्रो० कृष्णकुमार शामिल थे। समिति ने अपनी रिपोर्ट इस बात पर चिन्ता जताई है कि समाज में नैतिक मूल्यों में गिरावट आ रही है और विभिन्न समुदायों जातियों और समूहों में असहिष्णुता बढ़ रही है लेकिन दु:ख की बात यह है कि देश की मौजूदा शिक्षा व्यवस्था उसे बदलने में असफल है। इसलिए स्कूली स्तर पर बच्चों में सांस्कृतिक चेतना विकसित करने की जरूरत है। हमारी परीक्षा प्रणाली ऐसी है कि दाखिले की होड़ में फँस गये हैं और शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य ही खो गया है। यह देखते हुए समिति ने बच्चों में संस्कृति के प्रति जागरुकता को स्तरीय ढंग से बढ़ाने, पारम्परिक लोक एवं समकालीन कला रूपों को सिखाने तथा बच्चों की संगीत साहित्य और कला में रुचि विकसित करने पर बल दिया है।

पटियाला के डॉ० पुष्पपाल को शिरोमणि साहित्यकार पुरस्कार

भाषा विभाग पंजाब ने हिन्दी वर्ग में वर्ष 2005 का शिरोमणि साहित्यकार पुरस्कार पटियाला के विद्वान **डॉ० पुष्पपाल सिंह** को देने का ऐलान किया है। पंजाबी यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद से रिटायर हो चुके डॉ० पुष्पपाल सिंह को इस पुरस्कार के तहत एक लाख रुपये, सिरोपा और मैडल से सम्मानित किया जाएगा।

प्रसिद्ध समीक्षक, कथाकार, स्तम्भ लेखक और अनुवादक डॉ० सिंह की कहानियों ने भी अपनी विशेष पहचान बनायी है। 'तारीख का संग्रह' की उनकी कहानियों के अनुवाद पंजाबी, बांग्ला, मराठी, उड़िया, कन्नड़ में हो चुके हैं। डॉ० सिंह के 25 से अधिक ग्रन्थ, दस सम्पादित, दो अनूदित और 100 से ऊपर शोध प्रकाशित हो चुके हैं। इससे पहले डॉ० सिंह समीक्षा के लिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार हासिल कर चुके हैं। उन्होंने करतार सिंह दुग्गल के प्रसिद्ध उपन्यास 'सरबत दा भला' और 'समकालीन प्रतिनिधि पंजाबी कहानियाँ' का हिन्दी अनुवाद भी किया है।

लोकार्पण

'भये कबीर कबीर' जनार्पण

श्रीमठ आचार्यपीठ के स्वामी रामनरेशाचार्य द्वारा डॉ० शुकदेव सिंह की कृति 'भये कबीर कबीर' का जनार्पण

कबीर पूर्णिमा 22 जून को पूर्वाह्न श्रीमठ आचार्यपीठ के स्वामी रामनरेशाचार्य ने 'भये कबीर कबीर' पुस्तक का जनार्पण किया। उन्होंने कहा कि कबीर स्वामी रामानन्द के विचारों का काव्यरूप थे। उन्होंने अपने गुरु के मन्तव्य को ध्यान में रखकर जाँतपाँत का विरोध किया। मनुष्य बराबरी के लिए कविता और साधु की सीमा के भीतर अपना सच बताते रहे। 'भये कबीर कबीर' पुस्तक देश देशान्तर में कबीर के अध्ययन के प्रसिद्ध अध्येता शुकदेव सिंह के निबन्धों का संग्रह है। यह पुस्तक सभी पुस्तकों से अलग है। साधु-संतों, यात्रियों और गाँव-गाँव में फैले हुए कबीर के असर को संग्रह करके लिखी हुई उत्तम पुस्तक है।

हस्तलेखों को गहन छानबीन के बाद ही इसे लिखा गया है। पुस्तक में उणादि, विकरण और आदेश जैसे तत्त्व होंगे क्योंकि नया कहने वाले को पुराने से अलग होना ही पड़ता है। गोष्ठी में अनेक कबीरप्रेमियों ने भाग लिया। संचालन डॉ० उदयप्रताप सिंह ने किया। रमासिन्धु ने शर्मा आतिथ्य किया।

'काव्य वर्तिका' लोकार्पित

डॉ० वर्षा पुनवटकर 'बरखा' द्वारा सम्पादित अन्तर्राष्ट्रीय काव्य संग्रह 'काव्य वर्तिका' का लोकार्पण माधव भवन, वर्धा में सम्पन्न हुआ। श्रीमती चित्रा मुद्गल मुख्य अतिथि थीं, अध्यक्षता राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के प्रधानमंत्री श्री अनंतराम त्रिपाठी ने की, विशिष्ट अतिथि महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति श्री शिवशंकर मिश्र थे। 'काव्य वर्तिका' अंतर्राष्ट्रीय काव्य संकलन में 88 कवियों की रचनाएँ संकलित हैं, जिनमें स्थापित प्रसिद्ध कवियों के साथ नवोदित कवियों की रचनाएँ भी संकलित हैं।

श्रीमती चित्रा मुद्गल ने 'काव्य वर्तिका' का लोकार्पण किया।

इस अवसर पर देश के विभिन्न प्रदेशों से पधारे 45 व्यक्तियों को साहित्य सृजन, 7 को कला सृजन तथा 16 को समाज सृजन सम्मान प्रदान किया गया।

जिन्ना : एक पुनर्दृष्टि

वीरेन्द्र कुमार बरनवाल की किताब 'जिन्ना : एक पुनर्दृष्टि' का अनौपचारिक लोकार्पण 18 जून 2005 को इण्डिया इण्टरनेशनल सेन्टर एनेक्स, नई दिल्ली में हुआ। इस अवसर पर जिन्ना : पुनर्दृष्टि विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित हुई।

संगोष्ठी के प्रारम्भ में 'जिन्ना—ए करेक्टिव रीडिंग ऑफ इण्डियन हिस्ट्री' के लेखक एशियानन्द ने जिन्ना को धर्मनिरपेक्ष बताते हुए कहा कि देश का पतन 1920 में उस वक्त शुरू हुआ जब संवैधानिक रास्ता छोड़कर महात्मा गाँधी के नेतृत्व में आन्दोलन का रास्ता अपनाया गया। एशियानन्द के इस कथन का खण्डन करते हुए 'पांचजन्य' के पूर्व सम्पादक देवेन्द्र स्वरूप ने बरनवाल की पुस्तक के कुछ अंशों के जरिये जिन्ना के व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए कहा कि वे बहुत महत्वाकांक्षी थे और अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किसी भी हद तक जा सकते थे। उनकी राजनीति उनके पेशे की बाई-प्रोडक्ट थी।

वरिष्ठ पत्रकार प्रभाष जोशी ने बरनवाल की पुस्तक को शोध और भाषा ही नहीं दृष्टि के स्तर पर भी ताजगी से भर देनेवाली बताया और कहा कि यह हिन्दी में हुआ एक बेहतरीन राजनीतिक लेखन है।

'मिलीगजट' के सम्पादक जफ़र इस्लाम खान ने कहा कि हिन्दू और मुस्लिम दोनों समुदायों को लगने लगा था कि विभाजन के लिए जिन्ना ही जिम्मेदार हों, यह कहने की जगह हमें देखना चाहिए कि हालात कैसे थे? उन्होंने विभाजन के लिए बहुत से लोगों को जिम्मेदार बताया।

देवीप्रसाद त्रिपाठी ने बरनवाल की पुस्तक को महत्त्वपूर्ण मानते हुए कहा कि इसमें साहित्य और इतिहास का सामंजस्य है। यह एक गम्भीर शोध है तथा एक मनुष्य का नेता के रूप में कैसे विकास होता है? इसे लेखक ने अद्भुत तरीके से विवेचित किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए 'आज तक' के एंकर आशुतोष ने आजादी के इतने दिनों बाद जिन्ना पर छिड़ी बहस के मद्देनजर इसे जिन्ना का पुनर्जन्म बताया। संगोष्ठी की शुरुआत करते हुए राजकमल प्रकाशन के प्रबन्ध निदेशक अशोक माहेश्वरी ने बताया कि आजादी के इतने सालों के बाद भी यह भ्रान्ति है कि जिन्ना धर्मनिरपेक्ष थे या साम्प्रदायिक तथा भारत विभाजन के लिए जिम्मेदार कौन है? हमारी आने वाली पीढ़ी के सामने ये भ्रान्तियाँ न रहें इसी दृष्टि से यह संगोष्ठी आयोजित की गई है।

प्रसादजी की एक कविता

'अरी वरुणा की शांत कछार' जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध कविता है। कविता लम्बे अरसे से पढ़ी जा रही है और देश के अनेक विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में रही है। इस समय भी है। कविता सन् 1932 में 'जागरण' पाक्षिक के बसन्त पंचमी अंक में सबसे पहले प्रकाशित हुई थी। बाद में प्रसादजी ने उसे 'लहर' में संकलित किया। पर इस कविता में बीच की पंक्तियाँ उलट-पलट गईं और पाठ अशुद्ध हो गया। यह अशुद्धि पहले ही संस्करण में हो गई थी। पहले ही संस्करण में अशुद्धि आ जाने से 'लहर' के प्रत्येक संस्करण में कविता अशुद्ध रूप में ही छपती आ रही है। इतना ही नहीं, अशुद्ध पाठ ही वाराणसी सारनाथ मार्ग पर बने वरुणा सेतु पर भी बड़े-बड़े अक्षरों में अंकित किया गया है। पहले ही संस्करण में कविता में अशुद्धि क्यों आ गई, जबकि 'लहर' प्रसादजी के समय में ही प्रकाशित हुई थी, यह खोज का विषय हो सकता है। कविता बहुत बड़ी है और विचारप्रधान है। छंद पर ध्यान न जाने से कविता की अशुद्धि स्पष्ट नहीं होती। अशुद्ध अंश का शुद्ध रूप यह होना चाहिए—

विश्व मानवता का जयघोष, यहीं पर हुआ जलद स्वर मंद्र
मिला था वह पावन आदेश, आज भी साक्षी हैं रविचंद्र
छोड़कर जीवन के अतिवाद, मध्य पथ से लो सुमति सुधार
दुःख का समुदय, उसका नाश, तुम्हारे कर्मों का व्यापार
अरी वरुणा की शांत कछार, तपस्वी के विराग की प्यार।

'लहर' के आगामी संस्करणों में यह कविता शुद्ध रूप में ही छपे तो अच्छा हो और वरुणा सेतु पर भी कविता को शुद्ध रूप में ही अंकित होना चाहिए। सारनाथ की महाबोधि सोसायटी को भी इसमें रुचि लेनी चाहिए, क्योंकि कविता गौतमबुद्ध और बौद्ध दर्शन से सम्बद्ध है।

—डॉ० श्रीप्रसाद

व्यासजी का पुण्य स्मरण

डॉ० भवानीलाल भारतीय

पं० गोपालप्रसाद व्यास के निधन से हिन्दी में हास्य रस की कविता का एक प्रबल स्तम्भ ढह गया। 1945 की बात है। मैं अपने मित्रों के साथ हिन्दी साहित्य सम्मेलन के उदयपुर अधिवेशन में जा रहा था। मारवाड़ जंक्शन के स्टेशन पर व्यासजी को इण्टर के डिब्बे में बैठे देखा तो अनायास आटोग्राफ बुक उनकी ओर बढ़ा दी और उन्होंने भी बिना इस बात पर विचार किये कि सामने सत्रह वर्षीय किशोर खड़ा है, शायद भविष्य के लिए मार्गदर्शन सूचक, यह पंक्ति लिख दी—पत्नी को परमेश्वर मानो।

पं० गोपालप्रसाद व्यास हिन्दी में हास्य रस के तो श्रेष्ठ कवि थे ही, पत्नीवाद को कविता में प्रतिष्ठित भी उन्होंने ही किया था। मैं उनकी कविता का फैन था। जोड़-तोड़ कर कुछ पैसों का जुगाड़ किया और उनका काव्य संग्रह 'नया रोजगार' खरीदा। दैनिक 'हिन्दुस्तान' में उनकी हास्य कविताएँ निरन्तर छपती थीं। मैं उनकी कटिंग अपनी फाइल में रखता। आज साठ वर्ष बाद वह फाइल मेरे संग्रह में है। अन्य कविताओं के अतिरिक्त पाकिस्तान के बाबाए कौम (राष्ट्रपिता) मि० जिन्ना को लेकर उनकी कविता बड़ी तीखी बन पड़ थी।

चंद पंक्तियाँ मुलाहिजा फरमाएँ—

मैं उस गुरु (शायद अल्लाया इकबाल)
का शिष्य था,
जो 'ना' लिखा कर मर गए।
जो हाँ से तोबा कर गये,
और नाम 'जी ना' धर गये।
मैं बड़ा बातून पर
बातों में उनकी आ गया।
मैं मिशन (कैबिनेट मिशन) के प्रस्ताव को
हलुआ समझ कर खा गया।

और भी,

हाँ देह पतली थी मगर
मैं था न पतला खून का।
थी शक्ल कुछ ऐसी कि बस
मज़मून था कार्टून का

व्यासजी काव्य रचना में तो अग्रगण्य थे ही, व्यंग्यात्मक गद्य लिखने में भी लासानी थे। वे 'हिन्दुस्तान' दैनिक का हास्य कालम 'नारदजी खबर लाये हैं' वर्षों तक लिखते रहे। एक बार सस्ता साहित्य मण्डल के व्यवस्थापक पं० मार्तण्ड उपाध्याय (हरिभाऊ उपाध्याय के अनुज) के परिवार में किसी विवाह में भाग लेने अजमेर आये तो न्याय कार्यालय में उनका व्याख्यान रखा गया। उन्होंने बताया कि नारद प्रसंग को लिखने में उन्हें अठारह मिनट से अधिक समय नहीं लगता।

दस वर्ष पूर्व उनकी रोचक आत्मकथा 'कहो व्यास, कैसी कटी ?' नाम से छपी। मैंने पढ़कर जब अपनी प्रतिक्रिया से उन्हें अवगत कराया तो पत्रों का सिलसिला चल पड़ा। जैसा कि हमें विदित है बहुत पहले वे अपनी नेत्र ज्योति खो चुके थे किन्तु अन्य व्यक्ति से विस्तृत पत्र लिखवा कर भेजने में वे कभी देर नहीं करते थे। 29 फरवरी 1996 के पत्र में उन्होंने मुझे सतत लेखन में लगे रहने की प्रेरणा दी और लेखन को शब्द ब्रह्म की उपासना का जरिया बताया। वे अपने नये ग्रन्थ 'व्यंग्य विनोदापन' को प्रकाशित करा रहे थे। इससे पहले उनकी हास्य कविताएँ 'हास्य सागर' शीर्षक से प्रकाशित हो चुकी थीं। दिल्ली में हिन्दी भवन की स्थापना तथा उसके लिए उपयुक्त भवन का निर्माण व्यासजी की तपस्या का ही फल है। सच तो यह है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने का जो प्रयास पं० पुरुषोत्तमदास टण्डन, पं० चन्द्रबली पाण्डेय तथा पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जैसे महानुभावों ने किया था, व्यासजी भी उन्हीं हिन्दी सेवियों में अपना विशिष्ट स्थान रखते थे। किशोरवय में जीविका के लिए अखबार बाँटने का कार्य करना तथा बाबू गुलाबराय की प्रेरणा से 'साहित्य रत्न' उत्तीर्ण कर साहित्य सेवा में प्रविष्ट होना पुन: पद्मश्री से सम्मानित होना व्यासजी के यशस्वी जीवन के प्रमुख पड़ाव थे।

शिवानी की यादें

खुशवंत सिंह

कुमाऊँ पहाड़ियों के ब्राह्मणों—पंत, पांडे और जोशी में कुछ चीजें एक समान हैं। वे सुन्दर, मेधावी और सहज होते हैं। कुछ केन्द्र और राज्य सरकारों के मंत्री के यप में उच्च पदों तक पहुँचे हैं। अनेक आईसीएस, आईएफएस, आईएएस बने और कुछ को मानसिक अस्पतालों में बन्द करना पड़ा। इनमें सबसे अधिक प्रतिभाशाली महिला गौरा पंत थीं जिनका नाम इतिहास के पन्नों में लिखा जाएगा। उन्होंने शिवानी के नाम से हिन्दी में उपन्यास और कहानियाँ लिखीं। हालांकि हिन्दी साहित्य संसार में उनका नाम घर-घर में जाना जाता है, पर उनकी कृतियों का अंग्रेजी में बहुत कम अनुवाद हुआ है।

पहली बार उनकी बायोग्राफी हमारे सामने आई है, जिसे उनकी बेटी ईरा पांडे ने लिखा है। उन्होंने बहुत कुशलता से अपनी माँ के जीवन, उनके मित्रों के साथ उनके सम्बन्धों के विवरणों को बुना है। यह ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को पढ़नी चाहिए जो इस असाधारण महिला के बारे में जानना चाहता है। नि:सन्देह वह अपनी सुन्दरता, बौद्धिक क्षमता और सहजता के साथ-साथ एक प्रतिभाशाली लेखिका और प्रिय व्यक्तित्व भी हैं। उनके पिता ने रामपुर के नवाब के यहाँ होम मिनिस्टर बनने से पहले एक अध्यापक के रूप में जीवन आरम्भ किया था। वह समय समृद्धि के साथ-साथ मित्रता का भी था विशेषकर शाही परिवार के हमीद भाई के साथ उनका गहरा नाता था जिन्होंने शिवानी को अपनी दत्तक पुत्री बना लिया और उनके साथ जीवनपर्यन्त सम्पर्क बनाए रखा। शिवानी की शिक्षा शान्ति निकेतन में हुई थी और उन पर गुरुदेव टैगोर के लेखन का गहरा प्रभाव पड़ा था। उन्होंने हिन्दी के समान ही बांग्ला में धारा प्रवाह बोलना और लिखना सीखा। तथ्य यह है कि उनकी पहली प्रकाशित कहानी बांग्ला में थी। जब वह शान्ति निकेतन में थीं तभी उनके पिता की मृत्यु बंगलौर में हो गई। उन्होंने बहुत ही कम बैंक बैलेंस छोड़ा था। उनकी पढ़ाई का भार हमीद भाई ने उठा लिया। अलमोड़ा लौटते ही उनका विवाह एक विधुर से हो गया जिसके एक बेटी थी। उनकी पहली संतान सन्तान मृणाल पांडे का जन्म 9 महीने बाद हुआ। इस विवाह में बहुत से तूफान आए, परन्तु इसका श्रेय शिवानी को ही जाता है कि बच्चों को कभी यह पता नहीं चला कि उनकी बड़ी बहन सौतेली है।

शिवानी हद दर्जे की स्वतंत्र थीं। विभिन्न धर्मों, जाति या धन-दौलत के आधार पर उन्होंने कभी भेदभाव नहीं किया। वह अपने नौकरों से विशेष रूप से जुड़ी थीं। उन्होंने जिन परिवारों को गोद लिया उनके बच्चों की स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई की व्यवस्था की। जाहिर है उनका हाथ तंग हो गया। हालांकि उनके लेखन ने उन्हें असंख्य प्रशंसक दिए, लेकिन उन्हें अपने सदैव बढ़ते आश्रित परिवारों की आवश्यकताओं की पूर्ति में कठिनाई हुई। जब उनका अपना स्वास्थ्य बिगड़ने लगा तो उन्होंने किसी से भी अपने लिए सहायता नहीं माँगी। उन्हें अस्पताल में भती कराना पड़ा। उनकी हाजिरजवाबी जीवन भर उनके साथ रही। अपने प्रिय दिवंगत व्यक्तियों के बारे में उनकी श्रद्धांजलि प्रत्येक पाठक की आँखों में आँसू ला देगी। इसी प्रकार ईरा पांडे ने 21 मार्च 2003 की प्रभात बेला में अपनी माँ के अन्तिम क्षणों का वर्णन किया, ''शहर जीवंत हो रहा था, मस्जिदों में अजान अपने श्रद्धालुओं को बुला रही थी, पास के गुरुद्वारों से शबद आ रहे थे और मन्दिरों की घण्टियाँ बज रही थीं।''

मेरी प्रार्थना है कि हमारा जीवन बाहर से सादा तथा भीतर से समृद्ध हो। हमारी सभ्यता सामाजिक सहयोग के आधार पर दृढ़ता से टिकी रही, न कि आर्थिक शोषण व संघर्ष के आधार पर। जब हमारे जीवन-तत्त्व पर आर्थिक अजगरों के दाँत गड़े हों, तब यह कैसे सम्भव होगा। हमें सक्रिय रहकर यह कोशिश करते रहना होगा कि विश्व शक्तियाँ हमारे इतिहास को अपने स्वाभाविक दिशा की ओर बढ़ने में मार्गदर्शक बनें। **—रवीन्द्रनाथ टैगोर**

2005 में प्रकाशित पुस्तकें

आत्मकथ्य

शब्दों के आलोक में *कृष्णा सोबती* 550.00
देहरि भई विदेस सम्पा० : *राजेन्द्र यादव, अर्चना वर्मा, बलवंत कौर* 300.00

उपन्यास

जैनी मेहरबान सिंह *कृष्णा सोबती* 150.00
सरधाना की बेगम *रंगनाथ तिवारी* 500.00
दिगंत की ओर *बी०बी० मिश्र* 150.00
अस्तित्व *ज्ञानप्रकाश विवेक* 150.00
जो इतिहास में नहीं है *राकेशकुमार सिंह* 360.00
वसुंधरा *तिलोत्तमा मजूमदार* 475.00

लेख

न्याय का गणित *अरुन्धति राय* 250.00

आलोचना

बीसवीं शताब्दी का हिन्दी साहित्य *विजयमोहन सिंह* 295.00
जातीय मनोभूमि की तलाश *रेवती रमण* 145.00

संचयन

दूसरी दुनिया *निर्मल वर्मा* 395.00

कहानी-संग्रह

बियाबान में *सारा राय* 175.00
सागर तट के शहर *हिमांशु जोशी* 90.00
अगले अँधेरे तक *जितेन्द्र भाटिया* 125.00
प्रतिश्रुति : नरेश मेहता की समग्र कहानियाँ सम्पा० : *अनिलकुमार* 250.00

साक्षात्कार

उपलब्धि का आनन्द *आर०एम० लाला* 250.00

धर्म

गौतम बुद्ध और उनके उपदेश *आनन्द श्रीकृष्ण* 250.00

कविता

पहाड़ में फूल *किम वू जो, कर्ण सिंह चौहान* 350.00
कई रूप कई रंग *निर्मला ठाकुर* 150.00
मेरी जमीन के लोग *विनोदकुमार त्रिपाठी* 150.00
अपनी अपनी जमीन पर *बख़्शीश सिंह* 125.00

सन्दर्भ हिन्दी कोश

भारतीय रंगकोश खण्ड-1 *प्रतिभा अग्रवाल* 500.00
भारतीय संस्कृति कथाकोश *अमरनाथ शुक्ल*
(पूर्वार्द्ध) 350.00 **(उत्तरार्द्ध)** 350.00

निबन्ध

कहा-सुनी दूधनाथ सिंह 250.00

बाल गीत

नानी गाना गाए *शशि गोयल* 50.00
अक्षर ज्ञान *शिवमंगल सिंह 'मानव'* 40.00
मैं भी पढ़ने जाऊँगी *ज्योति परिहार* 30.00
मच्छर ने समझाया *डॉ० रंजना अग्रवाल* 50.00

चित्रकथा

शेख भिखारी *अनिन्दिता* 30.00
तिलका माँझी *अनिन्दिता* 30.00
वीर बिरसा *अनिन्दिता* 30.00

बाल कहानी

मनोरंजक बाल कथाएँ *उर्मि कृष्ण* 50.00
बोसकी के धनवान *गुलज़ार* 50.00

उर्दू शायरी

कुछ और नज़्में *गुलज़ार* 150.00

जीवनी

ह्वीलचेयर पर राष्ट्रपति *विनोदकुमार मिश्र* 150.00

धर्म दर्शन

जरतुष्ट्र ने यह कहा *फ्रीडरिश नीत्शे* 400.00

जनसंचार

फासीवादी संस्कृति और सेकूलर संस्कृति *सुधीश पचौरी* 200.00
सूचना प्रौद्योगिकी और समाचार पत्र *रवीन्द्र शुक्ल* 150.00

इतिहास

स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास *शशिप्रभा शास्त्री* 150.00

संस्मरण

पाकिस्तान में युद्धकैद के वे दिन *ब्रिगेडियर अरुण वाजपेयी* 195.00
वसन्त से पतझर तक *रवीन्द्रनाथ त्यागी* 190.00

समाजशास्त्र

डॉ० अम्बेडकर : समाज व्यवस्था और दलित साहित्य *कृष्णदत्त पालीवाल* 200.00

भाषा सम्मान

उड़िया-संस्कृत के विद्वान एवं लेखक **दुखीस्याम पटनायक** व संस्कृत-हिन्दी के विद्वान और लेखक **कमलेशदत्त त्रिपाठी** को 'साहित्य अकादमी भाषा सम्मान 2004' के लिए चुना गया है। 23 अगस्त को हैदराबाद में उन्हें सम्मान प्रदान किया जायेगा।

विश्वविद्यालय प्रकाशन की अनोखी प्रस्तुति

द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' का सम्पूर्ण साहित्य

निर्गुण रचनावली

(कुल छः खण्डों में)

सम्पादक
एल. उमाशंकर सिंह

हिन्दी कथा-साहित्य की प्रेम-परक शैली के सबसे बड़े कथा-शिल्पी **श्री द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण'** की सम्पूर्ण रचनाओं का छः खण्डों में अनूठा संग्रह है, जिसमें हैं—

• एक सौ पचास से अधिक कहानियाँ
• छः उपन्यास
• पचास से अधिक गीत-कविताएँ
• लेख • संस्मरण • साक्षात्कार • पत्र • चित्र
एवं
अन्य महत्त्वपूर्ण दस्तावेज

निर्गुण की कहानियों के लाखों दीवाने थे
हमारा विश्वास है अब भी हैं

हमारा दावा
निर्गुण को पढ़कर, आप भुलाये नहीं भूलेंगे!

अपनी प्रति सुरक्षित करायें

प्रकाशक
विश्वविद्यालय प्रकाशन
विशालाक्षी भवन, चौक, पो०बॉ० 1149
वाराणसी-221 001 (यू०पी०)
फोन व फैक्स : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com • sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

पुस्तक समीक्षा

भये कबीर कबीर

शुकदेव सिंह

प्रथम संस्करण : 2005

ISBN : 81-7124-384-3

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी

मूल्य : 250.00

भये कबीर कबीर : निर्वचन वाग्मिता

प्राय: पचास वर्ष से कबीर के इलाके के रमते जोगी शुकदेव सिंह की किताब 'भये कबीर कबीर' बाइस जून कबीर पूर्णिमा को प्रकाशित हुई। अखबारों में समाचार पहले, दुकानों पर किताब बाद में दिखाई पड़ी। उस किताब की पहली प्रति रामानन्द पीठ के आचार्य को समर्पित की गई जहाँ से कबीर को छ: सौ वर्षों से जोड़ा जाता रहा है। इस आयोजन के पहले वे, साहित्य अकादमी के स्वर्ण-जयन्ती-समारोह के 'कबीर उत्सव' में पहले आदमी के रूप में दिखाई पड़े थे और बनारस को आश्चर्य हुआ था कि दिल्ली के जलसे में बनारस को खास तरजीह दी गयी। फिर तो टी०वी० से लेकर अखबारों तक खबरें और इसके बीच इस किताब का पृष्ठ-पृष्ठ का यह वक्तव्य ''गूँगे के गुड और गूँगे की मिर्ची की तरह मीठा और तीता व्यक्त हो जाए, चेहरे ही बोल दें लेकिन जीभ न बोल सके ऐसी मृत जिह्व बानी के कवि कबीर सुर और तान की, भंगिमाओं में सधते हैं। सुनो भाई! के बाद 'साधो' का अर्थ है—साधु, साधना करो।'' जाहिर है इस वक्तव्य से साधुओं को तकलीफ होगी। फिर इस किताब का पन्ना पन्ना, ब्लार्ब, मरिहै संसारा प्रस्तावना और उनके पच्चीस चुने हुए लेख कबीर की पढ़ाई को बहुत अलग तरह से खोलते हैं।

तारीखों में नहीं, अनन्त काल में 'कबीर की जस की तस जिन्दगी' नामक लेख में कबीर के जीवन के चरितार्थ को लिखा गया है। कबीर के नाम मिलने वाली रचनाओं में जटिल अध्ययन का गणित पाठालोचन की दुनिया में अलग से पहचाना जाएगा। 'दलित साधुओं का परम्परा' और 'तद्भव उच्चार' नामक उनके लेख बीस-बाइस साल पुराने हैं जो कबीर सम्बन्धी ज्ञान को तरोताजा करते हैं, संतों को पढ़ने के लिए नयी शब्दावली देते हैं। 'कबीर की भाषा : समँद अकासाँ धावा' और 'कबीर की प्रासंगिकता' भी उनके बहुत प्रसिद्ध लेख हैं। शायद कई भाषाओं में उतरकर पढ़े गए हैं। 'बेघर जंगम संसार और कबीर के धुन की गमक' और 'कबीर के राम' पर झगड़ा भी होगा, रगड़ा भी होगा। कुछ पाठक मित्रों का कहना है कि उससे 'बोलती बंद' की दशा आमना सामना करेगी। सबसे अधिक विस्मय 'कबीर विद्या और विज्ञान योग' तथा 'रहस्यवाद का रहस्य और ज्योतिवाद' नामक दो लेख हैं जो कबीर की पूरी पढ़ाई पर प्रश्न चिह्न लगाते हैं और बड़ी गम्भीरता से सिद्ध कर देते हैं कि कबीर 'रहस्यवादी' नहीं 'ज्योतिवादी' थे। उनके ज्ञानमार्ग में कोई, कुहरा कोई अँधेरा नहीं है। 'ज्योति से ज्योति मिली' की प्रक्रिया है। इन दोनों लेखों से कबीर के पाठकों और अध्येताओं के सामने नई चुनौती सामने आयेगी। इस किताब में पहली बार कबीर पंथ की कई शाखाओं पर बहुत अच्छे लेख दिखाई पड़े। खास तरह से वंश शाखा, भगताही फिरका, कबीरचौरा की आचार्य परम्परा और कबीर के स्मरण तीर्थ, कबीर के उत्तर-पक्ष के बारे में सूचना देते हैं लेकिन प्रश्न-प्रतिप्रश्न भी तैयार करेंगे। वे बीजक-विद्या के पण्डित हैं। इसलिए बीजक पर इस पुस्तक में दो तीन लेख हैं। ये लेख ज्ञानियों का ज्ञानवर्धन करेंगे। साधारण पाठक के लिए उनका बहुत अर्थ नहीं होगा।

इस पुस्तक में 'प्रेमाख्यान काव्यों' पर एक अच्छा निबन्ध है लेकिन वह इस किताब में क्यों है ? इसे हर पाठक पूछना चाहेगा। यह स्पष्ट है कि कबीर पर लिखी हुई तमाम किताबों से यह किताब अलग है और कबीर के सम्बन्ध में नई जमीन और नया आसमान बनाती है। वास्तव में यह किताब केवल किताबों से नहीं बनी है। कबीर से जुड़ी मिट्टी की खोद-बीन और खोज-बीन दोनों की गयी है। भूमिका और पठित पुस्तकों की सूची से यह जाहिर हो जाएगा कि इस किताब को केवल पढ़ते हुए ही नहीं; समझते हुए भी लिखा गया है। लेखक की दुनिया कामगर मजदूरों, निहंगों साधुओं, मठों और जोगियों से लेकर फिल्मों तक फैली हुई है।

पुस्तक की प्रस्तुति बहुत उत्तम है। दो सौ पचास रुपये की यह किताब सुन्दर भी है और सस्ती भी है।

—डॉ० आनन्दकुमार पाण्डेय

कला-दर्पण

वासुदेव बलवन्तराय स्मार्त

अनुवादक

ना०वि० सप्रे

संस्करण : 2005

ISBN : 81-7124-383-5

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी

मूल्य : 200.00

'कला-दर्पण' भारतीय तथा पाश्चात्य चित्रकला का दर्पण है। चित्रकला की समस्त क्रिया-प्रक्रिया का चित्रात्मक अध्ययन है। पुस्तक तीन भागों में विभाजित है।

प्रथम भाग में कला का रसग्रहण के अन्तर्गत कला और ललितकला के अन्तर को व्यक्त करते हुए चित्र-कला के प्रमुख अंगों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

'द्वितीय भाग' में पश्चिमी कला के इतिहास के साथ चीनी कला का इतिहास भी दिया गया है।

'तृतीय भाग' में भारतीय शिल्प एवं स्थापत्य के साथ भारतीय चित्रकला के विकास का सर्वेक्षण है।

पुस्तक में सुप्रसिद्ध भारतीय एवं पाश्चात्य चित्रकारों की कलाकृतियों के हाफटोन चित्र हैं। चित्रकला के अध्येताओं के लिए यह महत्त्वपूर्ण कृति है।

हिन्दी नवजागरण

गजेन्द्र पाठक

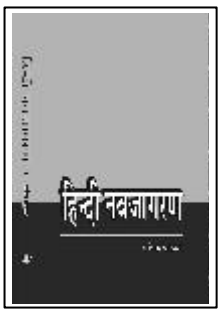

प्रथम संस्करण : 2005

ISBN : 81-7124-410-6

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी

मूल्य : 180.00

यह अध्ययन हिन्दी नवजागरण को भारतीय नवजागरण के सन्दर्भ में रखकर देखने का एक सार्थक प्रयास है। यहाँ औपनिवेशिक सत्ता से भारतीय मानस के टकराव और उससे उपजी स्वाधीनता की चेतना को नवजागरण का मूल माना गया है। इस पुस्तक में भारतीय अस्मिता की खोज के प्रयास का भी विस्तृत विवेचन है। साथ ही मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती' और हाली की रचना 'मुसद्दस' का तुलनात्मक अध्ययन विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। लेखक का यह निष्कर्ष ध्यान देने लायक है कि प्रकाशन की संस्कृति के कारण साहित्यिक विधाओं का किस प्रकार लोकतंत्रीकरण सम्भव हुआ।

विश्वास है यह पुस्तक लेखक के प्रथम प्रयास के बावजूद विषय की व्यापक और प्रामाणिक जानकारी एवं आलोचनात्मक समझदारी तथा अभिव्यक्ति की सराहनीय शैली के कारण अपने मकसद में कामयाब होगी।

कितने हिन्दुस्तान

सीधी सी बात
न मिर्ची मसाला
बस हिन्दुस्तान का सवाल
घेरा हुआ है बवाल
आत्म निरीक्षण करें तो
भीड़म भीड़ की
धक्का मुक्की में
हिन्दुस्तानी आज
स्वनाम धन्य नहीं
अनामधारी बना है
चलिये कमलेश्वर के साथ
हम एक प्रश्न चिन्ह
रेखित करें
कितने हिन्दुस्तान ?

—डॉ० एस० सुब्रमनिअन, चेन्नई

पुस्तक-प्राप्ति

विन्ध्य-क्षेत्र का सांस्कृतिक वैभव

डॉ० अर्जुनदास केसरी

प्रकाशक
उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र
14-सी०एम०पी० सिंह मार्ग, इलाहाबाद

मूल्य : 500.00

पलामू-रोहतास, मिर्जापुर-सोनभद्र, सरगुजा-सीधी जनपद सांस्कृतिक रूप से अत्यन्त समृद्ध हैं। इन जनपदों के सांस्कृतिक सर्वेक्षण की अपेक्षा थी। डॉ० अर्जुनदास केसरी जो अनेक वर्षों से आदिवासी समाज के सर्वांगीण विकास के लिए निरन्तर कार्यरत हैं, उन्होंने अत्यन्त परिश्रम तथा मनोयोग से विभिन्न जनपदों का सामान्य परिचय देते हुए इनकी मूर्तियों, मन्दिर, तीर्थ स्थलों, प्रागैतिहासिककालीन कल और संस्कृति, गढ़ दुर्ग, किला, महल तथा कोर्ट, अभिलेख-शिलालेख, प्रस्तर लेख तथा भित्ति लेख, बालुकाश्म, जीवाश्म तथा शैल-समूह आदि का सचित्र अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस विषय की यह अकेली पुस्तक है। पुस्तक में ऐतिहासिक तथा भौगोलिक अध्ययन हैं, जो रोचक के साथ ही ज्ञानवर्धक भी है। ऐसी कृति के लेखक-प्रकाशक दोनों को साधुवाद।

पूरब रंग की साधु कविता

डॉ० उदयप्रताप सिंह

प्रकाशक : तथागत प्रकाशन, सारनाथ

मूल्य : 200.00

पूरब रंग की साधु कविता डॉ० उदयप्रताप सिंह रचित नवीन पुस्तक है। डॉ० सिंह ने इस पुस्तक में भोजपुरी क्षेत्र में स्थित संत-सम्प्रदायों का सामाजिक परिवेश में अध्ययन किया है साथ ही अब तक अनालोचित पंथों-सम्प्रदायों और संतों पर विचार-विमर्श किया है। गोरखनाथ योगी होते हुए भी संतों का मार्गदर्शन करते हैं। मात्र शास्त्र और अंध-परम्परा दोनों में अविश्वास करने वाले संतों ने मानवधर्म को कागद की लेखी की अपेक्षा आँखिन देखी अधिक सशक्त ढंग से उजागर किया है। नाथपंथीय साधुओं ने जहाँ एक ओर प्रारम्भिक हिन्दी के स्वरूप को गढ़ा है वहीं भोजपुरी क्षेत्र स्थित संतों ने हिन्दी भाषा को साहित्य के स्तर पर जन-जन तक पहुँचाया है। डॉ० सिंह ने इन सभी दृष्टियों से अपनी पुस्तक में गहन विचार-विमर्श किया है।

नाथपंथी गोरखनाथ के अनंतर स्वामी रामानन्द ने सगुण-निर्गुण दोनों धाराओं को समान महत्त्व देकर धर्म और साहित्य दोनों को जनोन्मुखी बनाया। मानवीयता की एक धारा जहाँ कबीर-रैदास, कीनाराम, शिवनारायण तथा सदाफल साहब को बीसवीं शती तक रससिक्त करती है वहीं दूसरी धारा सगुण मार्गियों को भी भक्तिस्नात करती रहती है। **—युगेश्वर**

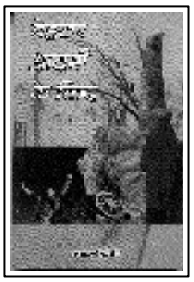

बेहतर आदमी के लिए

(कविता संग्रह)

नन्दल हितैषी

प्रकाशक : उमंग प्रकाशन
आई०-169, एल०आई०जी० कालोनी, इन्दौर

मूल्य : 70.00

जय-जगत की चर्चा-अर्चा

(श्री शरदकुमार साधक : एक परिचय)

प्रस्तुति : **डॉ० सुमन जैन**

जय जगत सेवा संस्थान
बी० 38/481, तुलसीपुर
वाराणसी-10

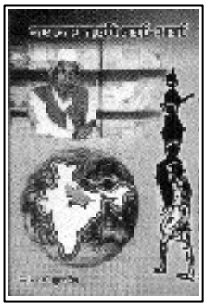

मूल्य : 150.00

कारण पात्र

अरुणकुमार शर्मा

आगम निगम संस्थान
बी० 5/23, अवधगर्वी
वाराणसी

मूल्य : 200.00

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 6 **अगस्त 2005** **अंक : 8**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि० वाराणसी
द्वारा मुद्रित

E-mail : sales@vvpbooks.com
Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

RNI No. UPHIN/2000/10104

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi.(0542)2421472,2413741,2413082,(Resi.)2436349,2436498,2311423 ●Fax(0542)2413082